ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-14 अक्टूबर-II, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

आध्यात्मिकता की खुशबू से महका नेपाल

काठमाण्डू-नेपाल। नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में आध्यात्मिकता की एक विशेष लहर फैली, इसमें साधारण नागरिकों से लेकर विशेष वर्ग भी पूरी तरह से लाभान्वित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण में प्रख्यात वक्ता के रूप ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. डॉ. मोहित तथा माननीय प्रकाश मान सिंह जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

नेपाल के भारतीय राजदूतावास में भी हुआ कार्यक्रम

नेपाल के भारतीय राजदूतावास में `बैलेंस शीट ऑफ लाइफ' विषय पर ही कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें सरकार के प्रमुख सचिव डॉ. सोमलाल सुबेदी और भारतीय राजदूत रंजीत रॉय भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में कॉलेज के भाई बहनें भी शामिल हुए।

साथ ही मेडिकल डॉक्टर्स एवं मेडिकल एसोसिएशन के लगभग 500 डॉक्टर्स को डॉ. मोहित गुप्ता द्वारा `विज्ञान और आध्यात्मिकता के बीच तालमेल कैसे करें', विषय पर गहण प्रकाश डाला गया, और साथ ही उन्होंने एक बहुत अच्छी बात ये बताई कि मेडिकल प्रोफेशन हम सिर्फ पैसे के लिए ना करें, बल्कि दुआएं कमाने के लिए करें।

प्रमुख बिन्दू

1. नेपाल में 3 दिन आध्यात्मिक कार्यक्रमों का हुआ विशेष आयोजन।
2. मुख्य आकर्षण के रूप में शाही परिवार भी हुआ शामिल।
3. संविधान सभा के माननीय सभासद् गण, नेपाल सरकार के सचिव एवं अन्य ऑफिसर्स और मंत्री परिषद के पूर्व अध्यक्ष ने भी कार्यक्रम में शिरकत की।
4. नेपाल स्थित भारतीय राजदूतावास में भी आयोजित हुआ कार्यक्रम।
5. ब्रह्माकुमार भाई बहनों के लिए विशेष कार्यक्रम का आयोजन।
6. ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह, ब्र.कु. शिवानी और ब्र.कु. डॉ. मोहित गुप्ता ने अपनी अनुभव युक्त बताई बातें।

ब्राह्मणों को मिली अलौकिक पालना

भृकुटी मंडप के विशाल प्रदर्शनी हॉल में करीब 4000 ब्राह्मण भाई बहनों की क्लास रखी गयी थी जिसमें विशेष ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह ने

काठमाण्डू-नेपाल। नेपाल के प्रधानमंत्री माननीय सुशील कोइराला के साथ आध्यात्मिक वार्तालाप करते हुए ब्र.कु. शिवानी व ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह।

रूप से आये मुख्य वक्ताओं ने सबके अंदर आने वाले समय और परिस्थिति से लड़ने हेतु अलग-अलग आध्यात्मिक बिंदुओं को अपने अनुभव के आधार से सबके सामने रखा तथा डॉ. मोहित गुप्ता, ब्र.कु. शिवानी व अपने अनुभव सभी के साथ बांटें व उनके अंदर उमंग-उत्साह भरा। कार्यक्रम के एक विशेष आकर्षण के रूप में एक अन्य बात ये थी कि वहां के प्रधानमंत्री माननीय सुशील कोइराला जी से मिलकर वहां के कार्यक्रमों की विशेष जानकारी दी गई। प्रधानमंत्री को आध्यात्मिक अभियान से लोगों का विवेक जागृत होगा इस बारे में बताया गया और इस विषय पर उनका वक्तव्य भी लिया गया। उन्होंने इस बात पर खुशी जताई कि इससे हमारे देश में शान्ति, एकता और सद्भाव का वातावरण बनेगा व देश और दुनिया में आध्यात्मिकता की लहर फैलेगी। ब्र.कु. राज दीदी ने सभी अतिथियों का शब्दों व प्रसाद द्वारा विशेष रूप से स्वागत किया और ऐसे कार्यक्रमों को कराने हेतु शुभेच्छा भी ज़ाहिर की।

शाही परिवार ने भी किया आध्यात्मिक स्नान

विशेष कार्यक्रमों के आयोजन में नेपाल के शाही परिवार को भी आध्यात्मिकता के कुछ बिन्दु का रसास्वादन कराने हेतु `शांत मन एवं आनंदमय जीवन' विषय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिसमें शाही परिवार के पूर्व युवराज्ञी हिमानी राजलक्ष्मी शाह सहित लगभग 150 शाही परिवार और राणा परिवार के लोगों ने भाग लिया। साथ ही साथ पाँच सितारा होटल में व्यापारी एवं उद्योगपतियों हेतु `बैलेंस शीट ऑफ लाइफ' टॉपिक पर ब्र.कु. शिवानी ने भाषण किया और बहुत गहन अनुभूति भी कराई।

आध्यात्मिक कायापलट, समय की पुकार

एकेडमी हॉल में शहर के गणमान्य नागरिकों के मध्य समय की पुकार विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. शिवानी तथा माननीय अतिथिगण।

काठमाण्डू-नेपाल। एकेडमी हॉल में समय की पुकार को लेकर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें संविधान सभा के माननीय सभासद् गण, नेपाल सरकार के सचिव एवं मंत्री परिषद् के पूर्व अध्यक्ष सहित 1400 लोग उपस्थित थे। इसमें ब्र.कु. शिवानी ने समय को और समय की गति को समझने हेतु बहुत ही सुंदर ढंग से सबके सामने समय की पुकार को रखा कि आज समय क्या मांग कर रहा है। उन्होंने कहा कि समय को देखते हुए हमें बदलने की बहुत-बहुत आवश्यकता है। हम जितना बदलेंगे उतना समय हमारे हिसाब से अपने आप ही बदल जायेगा। परिस्थिति व वातावरण को बदलने का आधार मनोस्थिति को बदलना है। जैसा हमारा संकल्प होगा वैसा ही वातावरण का निर्माण होगा। जीवन प्रबंधन विशषज्ञ ब्र.कु. शिवानी ने मन को शक्तिशाली बनाने के लिए राजयोग मेडिटेशन करना आवश्यक बताया। मेडिटेशन माना ही मन को ट्रेनिंग देना। तब ही वो शक्तिशाली होगा जैसे हम एक्सरसाइज़ द्वारा शरीर को सुदृढ़ बनाते हैं।

ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह मौजूद थे। प्रमुख रूप से `स्वस्थ एवं सुखी समाज के लिए राजयोग', `शांतिपूर्ण मन तथा आनंदमय जीवन' तथा `बैलेंस शीट ऑफ लाइफ' व `समय की पुकार' विषय पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान नेपाल के उप प्रधानमंत्री तथा स्थानीय विकास मंत्री

दशहरा का आध्यात्मिक रहस्य

भारत अध्यात्म प्रधान देश है। हमारे त्योहारों का भी आध्यात्मिक रहस्य है। आज त्योहार तो मनाये जाते हैं परंतु उनका रहस्य भूला जा चुका है। हर वर्ष दशहरा अथवा विजय-दशमी का उत्सव भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। कई दिन पहले से ही रामलीला शुरु हो जाती है। बच्चे बूढ़े सभी बड़े उत्साह से रावण के मरने तथा जलने का इंतज़ार करते रहते हैं और जब दशहरे का दिन आता है तो खूब खुशियाँ मनाते हैं। अवश्य ही रावण हमारा शत्रु है वरना किसी मित्र सम्बन्धी के मरने पर तो मातम छा जाता है। देखा जाये तो बुत सदा दुश्मन का ही जलाया जाता है। अब प्रश्न उठता है कि यह रावण शत्रु कौन है और इसे हर वर्ष क्यों जलाते हैं? साधारण रीति से यदि किसी से पूछा जाये कि रावण कौन था तो यही उत्तर मिलता है कि वह लंका का राजा था जो इतना शक्तिशाली था कि उसने जल, अग्नि, वायु तथा काल को अपने पलंग के पाँवों से बांध रखा था।

- ब्र. कु. गंगाधर

दशानन का अर्थ

उसे दशानन अर्थात् दस सिर वाला कहते हैं। परंतु क्या यह बात सत्य हो सकती है कि किसी व्यक्ति के दस सिर हों? ऐसा व्यक्ति भला सोता कैसे होगा? यदि रावण सचमुच दस सिर वाला था तब तो आज भी उसके वंश का कोई व्यक्ति दस सिर ना सही तो चार-पाँच सिर वाला तो दिखाई देना ही चाहिए था। वास्तव में रावण किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है, ना ही दस सिर वाला कोई मनुष्य होता है। रावण माया का प्रतीक है और इसके दस सिर माया के काम, क्रोध आदि पाँच विकारों की नर में और इन्हीं पाँच विकारों की नारी में प्रवेशता के सूचक हैं। यदि रावण कोई सचमुच का राजा विशेष होता तो उसे एक बार जलाने से ही काम पूरा हो जाता, परंतु यह माया का ही अलंकारिक प्रतीक है, इसलिए इसे हर वर्ष जलाते रहते हैं, जब तक कि यह रावण सचमुच जल जाये। दशहरा अथवा `दश-हरा' का अर्थ है नर-नारी के दस विकारों को हरना। सच्चा दशहरा तभी होता है जब रामेश्वर परमात्मा पतित मनुष्यात्माओं को पुनः पावन अर्थात् निर्विकारी बनाकर सच्चे राम-राज्य की पुनर्स्थापना करते हैं। दशहरा को विजय-दशमी भी कहते हैं। विजय-दशमी का भी भावार्थ है दस पर विजय पाना। मनुष्य पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों, इन दस इन्द्रियों के द्वारा विकारों के वशीभूत होकर ही विकर्म करता है। अतः विकारों पर विजय पाना ही विजय दशमी है।

नवरात्रि में शक्तियों की पूजा

विजयदशमी से पहले नवरात्रि में जो शक्तियों की पूजा होती है, उसका भी कुछ अर्थ है। नवरात्रि में लक्ष्मी, दुर्गा तथा सरस्वती की पूजा होती है। लक्ष्मी से धन मांगते हैं, सरस्वती विद्या की देवी है तो उससे बुद्धि का वरदान मांगते हैं और दुर्गा से शक्ति मांगते हैं। रावण पर विजय पाने के लिए शक्ति की आवश्यकता है। यह शक्ति भी आंतरिक चाहिए, क्योंकि विकार भी तो आंतरिक दुर्बलता से ही उत्पन्न होते हैं। अब यह दुर्गा इत्यादि देवियां जिनका कीर्तन करते समय लोग उनसे शक्ति तथा बुद्धि बल मांगते हैं, वे कौन थीं? वास्तव में ये देवियां शिव की संतान थीं जो `शिव शक्तियां' अथवा `ब्रह्मा पुत्रियां' कहलाती थीं। परमात्मा शिव को `महाकाल' भी कहते हैं। जैसे राजा जनक की बेटी जानकी और राजा द्रुपद की बेटी द्रौपदी कहलाती थी, वैसे ही महाकाल परमात्मा `शिव' की पुत्री को `महाकाली' कहा गया है। इन देवियों के हाथ में अस्त्र-शस्त्र भी दिखाते हैं। क्या ये देवियां संहार करती थीं? नहीं, माँ कभी अपने बच्चों का संहार नहीं करती। माँ का हृदय ममता और दया से भरा हुआ होता है। वह हिंसक बलि कैसे स्वीकार करेगी। माँ ने तो ज्ञान-खडग से अज्ञान के सर को काटा था अथवा बलि ली थी जिसकी यादगार में इसे तलवार दे दी गई है। माँ ने तो आत्माओं की ज्ञान-ज्योति जगाई थी, तो हाथ में दीपक दे दिया गया है। इन देवियों के हाथों में जो भी अलंकार हैं वे आध्यात्मिक शक्ति के चिन्ह हैं। तो दशहरे से पहले देवियों का पूजन रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त किये होने का यादगार है।

- शेष पेज 8 पर

कैसी भी परीक्षा की घड़ी में आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार रहो

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा ने कहा है 8 घण्टे याद करो, नींद कम करो। लेकिन विचार चलता है कि 16 घण्टे क्या करें! अटेन्शन है चलते फिरते खास नहाते, खाते बाबा की याद रहे। यह 84वां अंतिम जन्म है, इसमें एक बारी एक सेकेण्ड भी बाबा को भूलना भूल है। अगर कोई सेवा है तो कर्मयोगी हैं। कर्म करते लगन है, कर्मातीत अवस्था को पाना है। यह लगन की अग्नि पुराने विकर्म विनाश कर देती है। हिसाब-किताब चुक्तू, फ्री हो जाते हैं।

हम पदमापदम भाग्यशाली हैं जो आदि से जब शिवबाबा ब्रह्मा तन में आया तब से उसको देखा। बाबा को चलते भी देखा, सोते, खाते भी देखा। कोई बीमार पड़ा तो बाबा कितना बच्चे का ख्याल रखता। बाबा ने जब मुझे नर्स बनाया तो रोज़ बाबा मेरे से बात करता था। पेशेन्ट का हाल-चाल पूछता था फिर उसको दवाई भी बताता था। बाबा का इतना हम बच्चों से प्यार है, बाबा ने हमारी इतनी सम्भाल की है।

तो याद क्या है? मुरली सुनते अपने आपसे पूछना सच्ची-सच्ची याद क्या है? जैसे रेस के घोड़े इधर-उधर नहीं देखेंगे। बाबा कहते यह भी तुम्हारी घुड़दौड़ है, तुम्हारी रेस चल रही है, लेकिन कई बच्चों को माया ऐसी आती है जो रेस से बाहर निकल जाते हैं। जो बाबा की श्रीमत है, या डायरेक्शन्स हैं उसपर चलना ही आज्ञाकारी बनना है। आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार तीनों को अपने में देखो, जैसे चार सबजेक्ट हैं, वैसे यह तीन धारणायें हैं। आज्ञाकारी सदा ही हल्का रहता है, भारी नहीं होता है। जो श्रीमत पर चलता है वह थकता नहीं है। बाबा जो महावाक्य उच्चारण करता है वह कान सुनते हैं। इन बातों को भूल और क्या बातें याद करें! रेस का घोड़ा अपनी लाइन में चलता है। घोड़े कैसे दौड़ते हैं, टक्कर नहीं खायेंगे। अटेन्शन है मुझे दौड़कर पहुंचना है, पीछे नहीं जाना है। तो आज्ञाकारी वह बनता है जो वफादार है। एक बाबा दूसरा न कोई। आज्ञाकारी, वफादार नैचुरल ईमानदार होता है। एक कौड़ी भी इधर-उधर नहीं करेगा। आज्ञाकारी के सिर पर बाप का हाथ है। वफादार है तो बाबा को विश्वास है कि कहां भी इसकी बुद्धि लटकेगी, चटकेगी नहीं। जीवन यात्रा में बुद्धि कहां लटकी है या मेरे पीछे कोई लटकता है, तो आदत खराब है। मैं लटकी तो उस पर बाबा को दया नहीं आती है, क्षमा नहीं करता है। बाबा ने कहा था याद अव्यभिचारी हो। पतिव्रत, पिताव्रत में रहे। कैसी भी परीक्षा आये, पिताव्रता में आज्ञाकारी है, सतीव्रत में ईमानदार, वफादार हैं। जितना ज्ञान की गहराई में जायेंगे, योगयुक्त रहेंगे। बाबा के शब्द सिर्फ रिपीट नहीं करेंगे। उस पर चलता हुआ देख सबके लिए इज़ी हो जायेगा। ईमानदारी इतनी है। मुझे नशा है बाबा मुझे जनक नाम से ही बुलाता था, जनक माना विदेही और ट्रस्टी। राजाई में बैठे हैं। योग से राजाई पद है। खाते-पीते, चलते-फिरते कौन खिला रहा है! ईमानदार हैं तभी ट्रस्टी बन सकते हैं। बाबा ने माताओं को ट्रस्टी बनाया, खुद न्यारा हो गया। बाबा को देखो विदेही और ट्रस्टी रहा। कारोबार, संबंध में ट्रस्टी मेरा कुछ नहीं है, इतना तिनके मात्र भी नहीं है। भगवान भी देख रहा है, आप भी देख रहे हो। थोड़ा जो संकल्प और समय मेरे पास है, वह भी भगवान छोड़ता नहीं है।

आत्मा को परमात्मा का हुकम मिला हुआ है, विदेही रहो। बाबा जो कहता है वह क्या मैं प्रैक्टिकल कर रही हूँ! ब्रह्मा बाबा ने प्रैक्टिकल किया है तभी इतनी वंशावली पैदा हुई है। प्रैक्टिकल ब्राह्मण माना क्या, जो सत्यनारायण की अच्छी कथा करे, शुद्ध आहारी हो, सिम्पल रहकर सैम्पल बने।

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बातों के कारण हमारी खुशी न चली जाये

सभी के मन में कौन? सभी के मन में बाबा, बाबा, मीठा बाबा और बाबा भी किना प्यार से देख रहा है एक-एक बच्चे को। जैसे बच्चे प्यार से बाबा बाबा कहते हैं, तो बाबा भी कह रहे हैं कि बच्चे मेरे बच्चे, मीठे बच्चे। यह बाप और बच्चों का सम्बन्ध कितना प्यारा है। जब मुख से निकलता है बाबा, तो कितना प्यार दिल में आता है। सबके दिल में कौन? मेरा बाबा। सब कहते हैं मेरा, वन्डर तो यह है कि सबका एक है। मेरा बाबा हो गया तो बस बेफिकर बादशाह हैं। कुछ हो ही नहीं सकता, दिल में मेरे कौन है? बाबा। जो सर्वशक्तिवान है, जो शक्ति चाहिए वो हाज़िर, ऐसे अनुभव है ना! अनुभव करना चाहिए। बाबा मेरा है ना। हक है ना हमारा। बाबा कहा बाबा ने सुना, बाबा कर लेगा, उस समय ही करता है। ऐसा हमारा बाबा हमको मिला है तो कितनी खुशी होती है।

तो सब बाबा को याद करते आगे बढ़ने वाले हैं, बढ़ रहे हैं ना आगे? अरे, ऐसा बाबा फिर कब मिलेगा? सतयुग में भी नहीं मिलेगा। तो वो भूलेगा कैसे? तो सभी खुश, कुछ दिल में तो नहीं है! नहीं। दिल में बाबा है और कुछ नहीं। दिल से कह दिया मेरा बाबा, बस। यही बहुत है। दिल से कहा, बस। और बाबा को दिल में बिठाना तो सुख ही सुख है। और कोई बात दिल में नहीं आयेगी, बाबा बैठा है। तो अच्छा है। भगवान मेरा हो गया और चाहिए क्या! जो भी कुछ चाहिए बाबा, बाबा इतना राज़ी हो जाता है जो भरपूर कर देता है। अच्छा।

जितना बाबा को मेरा बनायेंगे उतना खुशी बढ़ेगी। दुनिया बिचारी जिसे ढूंढ़ रही है वह हमारे तो दिल में बैठा है। दिल से निकल नहीं सकता है। जब बाबा मेरा हो गया तो दूसरे को भुलाना बहुत सहज है। लेकिन बाबा के साथ दूसरा भी याद आवे तो उनको भुलाना भी मुश्किल है। तो मीठा बाबा, मेरा बाबा कहते ही सबकी शक्लें बदल जाती हैं। सभी के चेहरे पर क्या आ जाता! खुशियां ही खुशियां। ऐसी खुशियां सारे कल्प में नहीं मिलेंगी जो अभी संगम पर मिल रही हैं। अभी बाबा कहो तो बाबा बिल्कुल सामने आ जाता है। मेहनत करने की ज़रूरत ही नहीं। मेरी चीज़ कभी भूलती है क्या? छोटी सी गृहस्थी की चीज़ें वो भी नहीं भूलती हैं, तो यह तो मेरा बाबा है और बाबा कहने से ही कितनी बातें सामने आती हैं, बाबा ने क्या क्या किया...दिल में समा जाता है ना। और मेरा बाबा कहने से ही दिल खिल जाता है। मेरा बाबा मेरे दिल में समा गया, कमाल है बाबा की! कहता है मेरे को कोई स्थान अच्छा नहीं लगता, दिल ही अच्छा लगता है। मेरा बाबा है। बाबा भी कहता है हर बच्चा मेरा है। यह नाता पहले जाना ही नहीं था, बाप और बच्चे का नाता इतना समय चलना है। तो बाबा में सब सम्बन्ध आ गया, जो सब सम्बन्ध की भासना देने वाला है वो क्या होगा? जादूगर, जिस रूप से याद करो हाज़िर। तभी दिल से निकलता है मेरा और हमेशा सवेरे से लेकर जो भी कामकाज करते हैं, मेरा बाबा नहीं भूले। कोई भी बात आयेगी तो हम किसको आगे करेंगे? बाबा को। तो मेहनत सारी बाबा कर लेगा। ऐसे बाबा को देखो तो देखते ही रहो। बातें करो तो बातें ही करते रहो। टाइम ही नहीं पूरा होता। तो हमेशा बाबा मेरे साथ है, मैं अकेली नहीं हूँ। तो कितनी खुशी होती है। स्थूल में भी अनुभव है एक मिनट के लिए भी बाबा आ जाये तो कितनी खुशी होगी, मेरा बाबा आ गया, मेरा बाबा आ गया।

भले कामकाज करो, उसके बिना तो ठीक नहीं होगा ना। फिर तो डाटेंगे सभी, यह कहाँ जाती है? लेकिन बाबा कहता है चारो ओर का सम्भालो, ऐसे नहीं सिर्फ ज्ञान में बहुत अच्छे और सम्बन्ध में थोड़ा ऊपर नीचे होगा तो ज्ञान की ही बदनामी होगी इसलिए वो भी ध्यान पहले ज़रूरी है फिर आदत पड़ जाती है, तो ऐसे लगता है जीवन ही यह है। और खुशी कितनी होती है, अभी देखो कोई भी आवे हमारे सभी के बीच में तो सभी को मुस्कराता हुआ चेहरा दिखाई देगा, कोई रोने वाला नहीं, कोई ज़्यादा सोचने वाला नहीं जो दिमाग में असर आ जाये। खुश। अगर कोई रोते होंगे तो माया के साथी बनते हो। तो अपने दिल से वायदा करो, हमारे कहने से नहीं होता। जीवन में जो भी काम करते हैं चाहे ज्ञान में हैं, चाहे नहीं है लेकिन जो भी करते हैं, अपनी खुशी के लिए ही करते हैं। और खुश भी दिल खुश, यह रिकॉर्ड यहां का होना चाहिए। कभी भी बातें तो आयेंगी, हमारा पेपर तो लेंगी और किसका लेंगी। तो वेलकम। ताकत है ना वेलकम करने की, घबराने की नहीं। हाय यह क्या हो गया, नहीं। अच्छे ते अच्छा हो रहा है।

सोलापुर-महा.। सीनियर सिटिज़न के लिए आयोजित `जीवन सुंदर है' विषयक कार्यक्रम में डॉ. नितिन कोल्हे का स्वागत करते हुए ब्र.कु. सोमप्रभा दीदी व ब्र.कु. डॉ. हेमाद्रि। साथ हैं ब्र.कु. समीता, ब्र.कु. बलवंत व अन्य।

दुर्ग-छ.ग.। 'प्राकृतिक विज्ञान,आत्मिक तत्व ज्ञान' विषय पर आधारित आध्यात्मिक विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भारती ग्रुप ऑफ कॉलेज के डायरेक्टर सुशील चंडाकर, प्रचार्य डी.सी. परसाई, ब्र.कु. महेश, ब्र.कु. ओमकार, ब्र.कु. रुपाली व ब्र.कु. कामिनी।

चंद्रपुर-महा.। अशोक नेते,सांसद,गडचिरोली को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपक।

नवरात्रि में जगाएं, शक्ति की अलख!

''प्रसंग सुनो, आख्यान सुनो, किवदन्ती या फिर हो पौराणिक गाथा। सुनकर दिल है पुलकित होता, चमक ललाट पर आता।। हमारी गाथाएं भी तो ऐसी ही रही हैं जिसमें रोचकता है, पढ़ने में मज़ा आता है। भक्ति व भक्त जन तो और ही आनंदित होते हैं कि देवी की महिमा इतनी महान, कि वंदना व आरती गाते मुख कभी थके ना! बस जीवन को भक्ति रस से पूर्णतया सराबोर कर दें। नवरात्रि का पर्व उत्सव और उल्लास का एक अनुपम उपहार ही तो है जिसमें सभी जागृत होते व जगराता कर अपनी मनोकामनाएं पूरी करते।

अब हम आज जहां हैं, वहां से शुरु करते हैं। कलियुग में वर्तमान मानव की मनः दशा पर ज़रा गौर फरमाएं तो पाएंगे कि अभी भी इन व्रत त्योहारों के प्रति लोगों की आस्था घटी नहीं है, हाँ उसका स्वरूप भले बदल गया हो। लेकिन इस बदलते परिवेश में मन इन बातों को करता तो है, परंतु उसकी स्थिति दयनीय ही कहेंगे। सिर्फ व्रत या पूजा को एक नियम की भांति मानना, उतनी ही मानसिक व शारीरिक हिंसा करना, हमारी गिरावट को दर्शा रहा है।

क्या सिर्फ `दुर्गा सप्तशती' नामक ग्रन्थ, मधु व कैटभ जैसे राक्षसों के मर्दन का यशगान करने हेतु है या व्यक्तित्व में दुर्गा जैसी शक्तिशाली प्रवृत्ति की आवश्यकता है। वैसे भी मधु व कैटभ, मीठे व विकराल अर्थ के वाचक हैं। प्रमुखतः यह राग और द्वेष के प्रतीक इन राक्षसों ने सभी को बन्दी बना रखा है।

आने वाली नवरात्रि में हम-आप सभी कुछ संयम व नियम भी अपनाएंगे, पवित्रता भी अल्पकाल की धारण करेंगे, परंतु क्या इससे शक्तियां जागेंगी? जागेंगी भी तो थोड़े समय के लिए। आप सभी हर बार इस अवसर पर अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं आदि में दुर्गा व नवरात्रि, नौ देवियों के बारे में पढ़ लेंगे या सुन लेंगे, लेकिन सिर्फ पढ़ने के लिए, परंतु धारणा नहीं, तो क्या देवी आप पर कभी खुश होंगी! जो अपने आप में इतनी पवित्रता को धारण किए हुए हों, वह अपवित्र व पतित या विकारी मनुष्यों को वरदान देंगी क्यों! क्योंकि जीवन में वही सफलता प्राप्त करता है जिसने हर एक क्षण, हर पल अपने कर्म पर ध्यान दिया हो। जो लापरवाह हैं, उसने ऐसे ही देख लिया है सभी देव-देवियों को, उसके लिए देवी मायने नहीं रखती है, प्राप्ति मायने रखती है। इसलिए तो सभी रोना रो रहे हैं, देवी आजकल हम पर मेहरबान कम हैं। होंगी कैसे! उनकी रहम की दृष्टि है और हम बेरहम हैं, सभी कन्याओं को बुरी दृष्टि से देख रहे हैं। वैसी ही पुरानी ख्यालात को लेकर ढ़ोते हैं। घर का उद्धार करने वाली कन्या को तो मार रहे हैं, उसी के गर्भ से जन्म लेने वाले, पुत्र की मांग, माँ दुर्गा से भीक्षार्थ लेने की कोशिश कर रहे हैं। मानवता की क्षीण हालत, ऐसी हो चली है, जिसको वर्णन करना, शब्द व कलम दोनों को अशुद्ध करना है।

इसलिए हे मानव! अब तो जागो, अपने पर रहम करो, कर्म की गति को पहचानो, अपने को आशीर्वाद के लायक तो बनाओ। अभी आने वाला समय आप सभी को वो साक्षात्कार कराने वाला है, जो आप सोच भी नहीं सकते हैं।

- ब्र.कु. प्रभा,मुम्बई

बहुत सरल है राजयोग

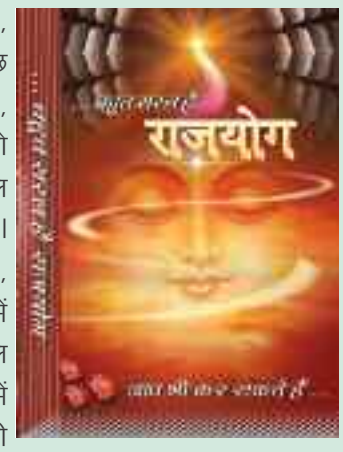

ज़्यादा पढ़ना नहीं चाहते, लेकिन जानना सब कुछ चाहते हैं, जानकारी भी हो, वह इतनी लाभकारी हो जो जीवन के हर क्षण, हर पल को संवारने में काम आए। मानते भी हैं, आज कम पढ़ें, अधिक बढ़ें, इसलिए इसमें सहायक होगी `बहुत सरल है राजयोग' पुस्तक। जिसमें कम पेज में, राजयोग की मनोवैज्ञानिक तरीके से व्याख्या की गई है। इसमें आत्मा व उससे सम्बन्धित गुणों तथा परमात्मा के साथ जुड़कर अपनी ज़िन्दगी को बेहतर बनाने का हर संभव प्रयास, कम शब्दों में किया गया है, जो दैनिक कार्यों में पूरी तरह उपयोगी, सदुपयोगी व सहयोगी होगी।

जामनेर-महा.। तहसीलदार देवगुन साहेब को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुषमा। साथ हैं ब्र.कु. मोहिनी।

केशोद-गुज.। नगर पालिका की प्रमुख श्रीमती जीवीबहन भोपारा का सेवाकेन्द्र में आने पर शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. रूपा।

कोल्हापुर-महा.। डी.आई.जी. संजय वर्मा को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु. गीता। साथ हैं ब्र.कु. रश्मि।

मैंगलुरू-अशोक नगर। राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय खेल कार्यक्रम में जीतने वाले 68 खिलाड़ियों के सम्मान कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए मेयर श्रीमती जेसिन्था फरनांडिस, वरिष्ठ पत्रकार रविन्द्र शेट्टी, फिज़ीकल एज्युकेशन ऑफिसर केशव, फिज़ीकल एज्युकेशन प्रेसीडेंट डोनाल्ड लोबो, फिज़ीकल एज्युकेशन एसोसिएशन प्रेसीडेंट दयानंद मादा व ब्र.कु. विश्वेश्वरी।

हुबली-गांधी नगर। अरुण जैन,डी.आर.एम.,साउथ वेस्टर्न रेलवे को राखी बांधते हुए ब्र.कु. लता।

जशपुर नगर-छ.ग.। सी.आर.पी.एफ. के जवानों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शकुंतला एवं ब्र.कु. ममता।

नीमच-म.प्र.। 'शांत मन सुखी जीवन' कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में बायें से डी.आई.जी. ग्रुप सेंटर आर.जी.आर.भट्ट, उद्योगपति डी.एस. चौरड़िया, ब्र.कु. राजू,माउण्ट आबू, विधायक डी.एस. परिहार, सी.आर.पी. रेंज डी.आई.जी. आर.एन.यादव व ब्र.कु. सविता।

पुणे। केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन एवं संसदीय मामलों के राज्यमंत्री प्रकाश जावड़ेकर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रूपा। साथ हैं ब्र.कु. गितिका व ब्र.कु. दीपक हरके।

सोलापुर। रक्षाबंधन पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान हीना टंक,अध्यक्षा, इनरव्हील क्लब को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सोमप्रभा।

बड़ौदा-मंगलवाड़ी। राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. निरंजना, कलेक्टर अवंतिका सिंह, ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. डॉ जयंत, ब्र.कु. नरेन्द्र व अन्य।

पेटलाद-गुज.। मामलतदार ब्रसभट्ट बहन को राखी बांधते हुए ब्र.कु. भगवती।

रीवा-म.प्र.। जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव को राखी बांधते हुए ब्र.कु. निर्मला।

राजकोट-रविरत्न पार्क। ब्रह्माकुमारीज़ व कॉमरेड्स ग्रुप द्वारा संयुक्त रूप से गणेश चतुर्थी पर आयोजित चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. भारती। साथ हैं ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. अंजू, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. डिम्पल, जीनियस स्कूल के श्रीकान्त भाई, कॉमरेड्स ग्रुप प्रमुख बिरेन कालावादिया, कपिल भाई व अन्य।

शारीरिक के साथ मानसिक आराम भी ज़रूरी

गतांक से आगे...

प्रश्न: इससे और क्या-क्या हो सकता है?

उत्तर: ऐसा बोल करके आप और भय पैदा करोगे। जैसे गुजरात में जो भूकम्प आया तो उससे बहुत बड़ा नुकसान हुआ। उसके बाद सारे लोगों का ध्यान भूकम्प की ओर गया कि भूकंप से पहले हमारी क्या-क्या तैयारी होनी चाहिए। मकान को कैसे बनाना चाहिए। लेकिन उसके बाद फिर सुनामी आ गया। हमलोग भूकम्प से बचने के लिए तैयार थे, लेकिन सुनामी के लिए तैयार नहीं थे। हम विपत्ति आने पर उसका सामना करने के लिए तैयार नहीं रहते हैं कि इसका हमें किस तरह से सामना करना है। उसके लिए मुझे मज़बूत बनना होगा, ताकि कोई भी परिस्थिति आ जाये, चाहे वो सुनामी या भूकम्प ही क्यों न हो, हम उस परिस्थिति में भी स्थिर रह सकते हैं।

प्रश्न: यह तो आपदा प्रबंधन हो गया!

उत्तर: जब कोई विपत्ति आती है तो क्या आप उसका सामना करने के लिए तैयार होते हैं! उसमें भी आपदा प्रबंधन न करके हम स्व-प्रबंधन कर दें। स्व-प्रबंधन हो जाये तो फिर कोई भी विपत्ति आ जाये हम सुरक्षित रहेंगे। इसलिए हम डिनोमेरेटर और आंतरिक क्षमता पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। आप खुद अनुभव करेंगे कि परिस्थितियां वही हैं, कॉम्पीटिशन वही है, लेकिन आपका तनाव का कारण कम होता जा रहा है।

प्रश्न: हमारे पास एक पिता का मेल आया, उसमें उन्होंने कहा है कि हमने पूरे घर का वातावरण अच्छा बनाया हुआ है लेकिन फिर भी मुझे डर लगा रहता है कि मेरा डर, मेरे बच्चे तक तो नहीं पहुंचेगा, अब मैं क्या करूं कि मेरा डर मेरे बच्चे तक न पहुंचे?

उत्तर: हम रिलैक्स करने के लिए अनुभव कर रहे हैं यह बहुत अच्छी बात है, लेकिन हम बाहर तो सब कुछ कर रहे हैं, घर का वातावरण अच्छा बना रहे हैं, जिसमें बच्चा बहुत आराम से रहेगा, लेकिन अगर भय पैदा हो रहा है तो वो आपके वायब्रेशन्स हैं। शारीरिक आराम एक छोटा सा पार्ट प्ले करती, लेकिन मेंटल रिलैक्सेशन बहुत ही महत्वपूर्ण है। मेंटली रिलैक्स होने का मतलब है कि कोई भी भय नहीं।

ब्र. कु. शिवानी

हम किस चीज़ का डर पैदा कर रहे हैं। मान लो हम सफल नहीं हुए तो, फिर उसके पीछे-पीछे अपनी थॉट्स को देखते जायें कि हमने सफलता का आधार किस पर रखा है, 95 परसेंट मार्क्स पर। अगर 95 परसेंट नम्बर नहीं आये तो उसे फेल माना जाता है। ये आशा कर-कर के हम डर पैदा कर रहे हैं। जो हम डर पैदा करेंगे वो मुझे भावनात्मक रूप से खाली कर देता है और मेरे बच्चे को भावनात्मक रूप से कमज़ोर कर देता है। हम यह ध्यान नहीं देते हैं कि बच्चा अभी बड़ा हो रहा है, उसके मन में हम अभी से डर पैदा करते जा रहे हैं। स्कूल में नामांकन से लेकर 10 वीं क्लास तक के बच्चों में शारीरिक विकास होता है और उसके साथ-साथ उसका भावनात्मक रूप से भी तो विकास होता है। अब विकास की इस अवस्था में सारे दिन हम उसे कौन सी एनर्जी दे रहे हैं? अगर उस बच्चे की नेगेटिव एनर्जी डर और भय की है तो वह इसे बहुत जल्दी ग्रहण कर लेता है। आज हम देख रहे हैं, आज के व्यावसायिक जगत में भावनात्मक बुद्धिमता देखने को नहीं मिलती है। ज़्यादा नहीं आप आज से बीस वर्ष पीछे जायें तो आप देखेंगे कि उस समय इमोशनल इंटेलिजेंस देखा जाता था, उसका ऐटिच्यूड टेस्ट होता था। आज हम इंटरव्यू के लिए जाते हैं तो भावनात्मक स्थिरता की परीक्षा ली जाती है, क्यों? क्योंकि अब शिफ्ट में कार्य होता है। ठीक है आज तो बहुत सारे लोग हैं जो आई.आई.टी. से आ रहे हैं, आई.आई.एम. से आ रहे हैं। हम वैसे लोगों को चाहते हैं, जो हर परिस्थिति में स्थिर रहकर कार्य कर सकें। अब अगर कॉरपोरेट सेक्टर का जिसके लिए आप अपने बच्चे की तैयारी करा रहे हैं। जब उनका फोकस इमोशनल स्थिरता पर आ गया है तो ये इमोशनल स्टेबिलिटी कौन क्रियेट करेगा बच्चे के अंदर? हमें ही क्रियेट करना पड़ेगा। हमारा बच्चा जीवन में सफल तभी हो पायेगा, जब वो भावनात्मक रूप से स्थिर होगा। हम इतना भय, इतनी अपेक्षाओं का दबाव बच्चे के अंदर डाल देते हैं कि वह उस अपेक्षा के दबाव के कारण अच्छा परफॉर्म नहीं कर पाता है। अगर हम अपने बच्चे को यह कह पाते कि आप मेहनत करो लेकिन खुशी से करो तो मैं आपका साथ दूंगा, आपके जितने भी मार्क्स आयेंगे उससे मैं खुश रहूंगा। लेकिन साथ-साथ उसे अच्छे से अच्छा परफॉरमेंस करने की प्रेरणा भी देते रहें।

हम ये सोचते हैं कि अगर हम ये कहेंगे कि आपके जितने भी मार्क्स आयेंगे तो मैं उसे स्वीकार कर लूंगा तो हमें लगता है कि बच्चे के ऊपर फिर तो कोई दवाब ही नहीं पड़ रहा है। - क्रमशः

अचूक घरेलू उपचार

प्रतिदिन जिन भोज्य पदार्थों का हम सेवन करते हैं, उनके फायदे एवं छोट-मोटी बीमारियों से राहत पाने के विषय में हम प्रायः ही आलेखों में पढ़ते हैं। हम प्रतिदिन भोज्य पदार्थों के तौर पर सब्जियों, मसाले, ठंडे व्यंजनों तथा गर्म पानी का सेवन करते हैं अथवा सामान्य तकलीफों से निजात पाने के लिए उनका प्रयोग करते हैं। इन स्रोतों की विस्तृत जानकारी वर्णित है–

- वसायुक्त शरीर के लिए गाजर का सेवन लाभदायक है। यह हमारे भूख को वश में करता है, जिससे हमारा वजन नियंत्रित रहता है। पुदीने की पत्तियां भी उतनी ही असरदायक हैं। लोग इसका सेवन खट्टे पेय पदार्थों के साथ पसंद करते हैं। गर्म पानी के साथ सौंफ का सेवन, पपीता तथा दही भी इतने ही लाभदायक हैं।

- पेट दर्द में गर्म पानी के साथ अल्पमात्रा में अजवाइन एवं काला नमक का सेवन तुरंत आरामदायक होता है। एसिडिटी होने पर लौंग का सेवन भी बहुत प्रभावी है। स्वस्थ पाचन क्रिया के लिए चुटकी भर नमक के साथ अदरक का सेवन कारगर नुस्खा है।

- अलसी के बीज भी सशक्त एंटी ऑक्सिडेंट हैं, इसके साथ ही यह ओमेगा-3 एसिड का अच्छा स्रोत है जो हमारी प्रतिरक्षा-प्रणाली के लिए लाभदायक है।

- पश्चिम के व्यापक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि हल्दी का नियमित सेवन विक्षिप्तता की घटनाओं का निवारण करता है। कैंसर के मामलों में ऐसा पाया गया है कि मेटास्टॅसिस की प्रक्रिया को रोकता है, जिसमें कैंसर के सेल शरीर में एक स्थल से दूसरे स्थल पर चले जाते हैं।
- अनार एक रसीला स्वादिष्ट फल है। यह अनीमिया के मरीजों के लिए फायदेमंद

है और यह साबित भी हो चुका है। इसका सेवन हमारे दिल के लिए भी अच्छा है। ऐसा पाया गया है कि वजन घटाने में यह सहायक है। यह शरीर में इंसुलिन की मात्रा को बिना प्रभावित किए वजन बढ़ाने वाली कोशिकाओं के निर्माण को कम करता है। गर्भवती महिलाओं को भी अनार के सेवन की सलाह दी जाती है। इसके साथ ही गठिया के मरीजों के लिए भी यह लाभदायक है। यह हमारे हृदय-प्रणाली के लिए लाभप्रद फल है।

बहुत ही सहज है राजयोग...

सभी कहते हैं कि मेरा काफी दिनों से इलाज चल रहा है, मैं ठीक नहीं हो पा रहा हूँ। आज तक तकनीकी रूप से सक्षम होने के बावजूद भी हम स्वस्थ नहीं हैं, कहीं हम गलत भ्रांति में तो नहीं जी रहे हैं। बात ठीक भी है क्योंकि आपके स्वास्थ्य पर आपके गुणों का प्रभाव पड़ता है। यदि आप गुणी हैं तो आप सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं। इसे चाहे तो आप अपने आस-पास लोगों को देखकर अंदाज़ा लगा सकते हैं।

गतांक से आगे...

प्रेम : प्रेम का सम्बन्ध हमारे हृदय से माना जाता है। प्रेम प्रकृति के वायु तत्व से जुड़ा हुआ है। अर्थात जहां-जहां वायु जाती है वहां-वहां हमारा प्रेम स्वतः पहुंच जाता है। आज लोभ वृत्ति के कारण हम बाहर के पेड़ काटते जा रहे हैं, जिससे ऑक्सीज़न की कमी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जो हमारे शरीर के श्वसन तन्त्र को प्रभावित करती है। वायु की कमी व लोभ वृत्ति व प्रेम की कमी के कारण हमारे हृदय व धमनियों व शिराओं में ब्लॉकेज होते जा रहे हैं। यदि हम सबसे प्रेम बढ़ाएं तो हमारा और प्रकृति का बैलेन्स होता रहेगा। वैसे भी प्रेम का प्रतीक हरा रंग है और गांव में तो मान्यता भी है जो दिन-भर हरे-भरे खेतों को देखता है उसे कभी हृदयघात या हार्ट अटैक जल्दी नहीं आ सकता। यदि आप अपने हृदय को स्वस्थ रखना चाहते हैं तो प्रकृति के इस तत्व को खूब प्यार दें अर्थात् अपना प्रेम स्वरूप इमर्ज करें तो इससे वायु तत्व बिल्कुल शांत हो जाएगा और आप स्वस्थ हो जाएंगे।

शांति : शांति का सम्बन्ध प्रकृति के आकाश तत्व से है। इसका सम्बन्ध हमारे शरीर के ई.एन.टी.(कान, नाक व गला) सिस्टम से है। आकाश तत्व का रंग हल्का नीला (आसमानी) है। इसलिए जब भी हम ऊपर की तरफ या बादलों की तरफ या खुले आसमान को देखते हैं तो कितनी शांति महसूस होती है। आज हमारी शांति भंग होने का कारण अहम् या ईगो है। आज सभी छोटी-छोटी बातों में हर्ट हो जाते हैं या डिस्टर्ब हो जाते हैं, पता है क्यूं , क्योंकि कोई किसी को स्पेस नहीं देना चाहता अर्थात् बोलने की छूट नहीं देना चाहता। इसी कारण से सभी अपने आपको राईट समझते हैं, जिसके कारण दुःखी होते हैं। इसको यदि हम और स्पष्ट करें तो कह सकते हैं कि हमारा दिल आज बहुत छोटा हो गया है, आज हम किसी को अपने दिल में जगह नहीं दे पा रहे हैं क्योंकि हमारा मन बहुत अशांत है। अशांत मन के कारण हम छोटों से तुलना करने लग जाते हैं। यदि आपके अन्दर अहम् है तो इससे दो चीज़ें पैदा होती हैं, एक तो अभिमान, दूसरा अपमान। अभिमान कैसे, यदि आप किसी से अपनी तुलना करके बड़ा महसूस करते हैं तो इसका आपको अभिमान हो गया और यदि वो आपसे बड़ा हो गया तो आपके अन्दर अपमान या ईर्ष्या की भावना पैदा हो जाएगी। इसलिए शांत मन से आप कार्य करेंगे तो सभी को सुन व समझ पाएंगे। - क्रमशः

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-9

1		2		■	3				4
	■		■	5		■	■	■	
■	6	■	7		■	■	8		
■	9		■	10				■	
11		■	■	■	■	■	■	12	
	■	13	■	■	14	15		■	■
■	16		17	18			■	19	20
21		■	22			■	23	■	
	■	24	■		■	25			
■	26			■	27			■	■

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. चाँद, चन्द्रमा, दान-शुल्क (3)
2. गणेश का भोग (2)
3. हाथ, कर (2)
4. महा ब्राह्मण,.... को पुराना सामान दे दिया जाता है (5)
5. न जानने वाला, अज्ञात, नमाज से पूर्व का बुलावा (3)
6. पुत्र, लड़का, सन्तान (3)
8. विजय, सफलता, कामयाबी (2)
11. खुदगर्ज़, स्वार्थ की सिद्धि चाहने वाला (2)
13. नष्ट,समाप्त, विनाश (2)
14. मुसीबत, समस्या, विपदा
15. भलाई, कल्याण, उपकार (2)
16. प्रसन्नता, मर्जी, इच्छा (2)
17. कत्था, कीकर, कुशल (2)
18. राजा, नृपति, भूपति (3)
20. नगर, राज्य (3)
21. भगवान, अल्लाह, मुश्किलों से कह दो मेरा.... बड़ा है (2)
23. इलाज, औषधि (3)
24. सौतेला, जुड़ा हुआ (2)
25. खिदमत, परिचर्या (2)

बायें से दायें

1. अस्थिरता, चपलता, शरारत (4)
3. हम जिंस, अपने जैसा (5)
5. छिपना, लुप्त, गायब होना (2)
7. राज्य करने वाला (2)
8. जीवन कहानी (3)
9. फायदा, कमाई, जमा (2)
10. अदा, नखरा, चोचला (4)
11. जायका, रसना (2)
12. मुख्य तत्व, धारणा के लिए मुख्य ....(2)
14. धीरे, मन्दगति से (3)
16. हाल, समाचार (2-4)
19. समझ, ...योग धारणा सेवा (2)
21. सेवा का प्रत्यक्ष फल, आनंद (2)
22. चांदी, उज्जवल (3)
25. सेवा करने वाला (4)
26. लगन, शादी के पहले की एक रस्म (3)
27. दामाद, जमाता (3)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन

भिलाई-छ.ग.। लोकार्पण कार्यक्रम में राजयोग के बारे में बताते हुए ब्र.कु. माधुरी। मंचासीन हैं प्रेम प्रकाश पांडे,राजस्व मंत्री,छ.ग. शासन, अरुण वोरा,विधायक, श्रीमती निर्मला यादव,महापौर, नगर निगम सभापति राजेन्द्र अरोरा व अन्य गणमान्य जन।

मुम्बई-गामदेवी। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित डी-एडीक्शन कैम्प के दौरान विधायक अमिन पटेल का स्वागत करते हुए ब्र.कु. आशा।

सतना-म.प्र.। गणेश सिंह जी को राखी बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता। साथ हैं ब्र.कु. मीना व अन्य।

केशोद-गुज.। 'स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत आयोजित सफाई कार्यक्रम में सम्मिलित हुए शहर की प्रथम नागरिक जीवी बहन भोपारा, ब्र.कु. रूपा, शहर के अग्रणी व्यापारी गण, शिक्षकगण व ब्र.कु. भाई बहनें।

सूरत-रांदेड़। पुलिस इंस्पेक्टर को राखी बांधने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. लीला व ब्र.कु. प्रीति।

सूरत-मजुरागेट। आदित्य बिरला ग्रुप के अल्ट्राटेक सीमेंट लि. कम्पनी के मानव संसाधन विभाग की ओर से ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'स्ट्रेस मैनेजमेंट ट्रेनिंग' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सोनल। सभा में उपस्थित हैं कम्पनी के डी.जी.एम. छबीलाल पांडे व कम्पनी के 45 मैनेजर।

आओ हम श्रीराम के नज़रिये को समझें!

सभी कहानियों व किवदन्तियों को पढ़ते और पढ़कर खुश भी होते, और बार-बार उन पन्नों में इतिहास को देखने की कोशिश करते। अरे, इतिहास कोई भी बना, तो उसका भी तो पिछला इतिहास होगा ही, और वो कितने रहस्यों को समेटे हुए है, इसे जानने के लिए हमें बुद्धि को आसमान के समान वृहद बनाना होगा, तब हम इसकी थोड़ी सी झलक पायेंगे!

हम किसी भी धर्मग्रन्थ को उठाकर देखें, सभी धर्मग्रन्थों में आ जाकर एक बात पर ही ज़ोर दिया जाता है कि कर्म से ही भाग्य है, कर्म से पुण्य व पाप होते हैं। जिस पात्र का कर्म पर अटेन्शन कम है, भोगनाओं का सबसे बड़ा भागी है। उसी तरह हमारा धर्मग्रन्थ, या महाकाव्य रामायण है, जिसमें हर पात्र को उसकी प्रकृति के हिसाब से सबके समक्ष रखा गया है। प्रकृति भी अपने-आप में वृहद है, तो दूसरों की प्रकृति ऐसे तो नहीं समझी जा सकती ना! धर्म की स्थापना हेतु, बुराई पर अच्छाई की जीत, और उस जीत के पश्चात् राज्याभिषेक, तत्पश्चात् राज्य संचालन आदि प्रक्रियाओं का घटना, एक श्रृंखला है, जिसे हमें एक-एक करके समझना होगा।

उत्तर काण्ड में संत श्री तुलसीदासजी ने परमात्मा की मूल प्रकृति को वर्णित किया है। उन्होंने सीधे शब्दों में यह बात कही है कि यह किसी देहधारी, श्याम वर्ण धारी श्रीराम चन्द्र जी का वर्णन नहीं है, परन्तु यह एक परमात्मा के चरित्र वर्णन हेतु, घटना का चित्रण रूप है।

उत्तरकाण्ड में एक चौपाई बहुत प्रचलित है।

``सुन खगपति यह कथा पावनी।
त्रिविध ताप भव भय दावनी।।

यहां सिर्फ दो ही लाइनें हैं, जिसको तुलसीदास जी ने वर्णन करते हुए प्रसंगवश कहा कि ``राम कथा को सुनने मात्र से `दैहिक, दैविक व भौतिक तापों का शमन हो जाता है। जहां कथा की बात आयी है तो हम आपको याद दिलाना चाहेंगे कि कथा का वर्णन जीवंत तो नहीं होता है, किसी घटना को कहानी का रूप देकर उसको चरितार्थ किया जाता है।

इसलिए इस राम कथा में भी रहस्य यह है कि राम शब्द त्रिविध रूपों में निर्मित एक सार है। कहने का भाव `राम नाम' में ज़्यादा ताकत है या `राम' में ज़्यादा ताकत है। इसलिए `राम' परमात्मा का एक नाम है। वहीं दूसरे राम का अर्थ, आत्मा के साथ जोड़ा गया है। अर्थात् आत्मा भी सत्-चित् आनंद स्वरूप है।

परंतु आज हुआ यह है कि आत्मा राम थोड़ा सा कलंकित है। आत्मा, अपने लक्ष्य से भटक सी गई है। आज उसके साथ ना तो लक्ष्य रूपी लक्ष्मण है और ना ही भावनाओं से रत भरत है, ना ही वह शत्रुघ्न है, अर्थात् बिना शत्रु का। आज आत्मा के अंदर शत्रुओं का अम्बार है। वहां तो सिर्फ, एक रावण को मारा गया, बार-बार उसे मरते हुए दिखाया गया।

हमारे हिसाब से दशहरा शायद इन्हीं बातों का प्रतीक है कि, दस मुख वाले रावण अर्थात् (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, निंदा, घृणा, आलस्य, भय) को हटाने वाला ही दशहरा, या उस पर विजय प्राप्त कर विजयी बनाता है। अब यहां यदि देखा जाए तो कह सकते हैं कि राम ने यदि रावण को त्रेता में मारा, तो आज उसे जलाने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

उस राम राज्य में सभी राम जैसे हों, तभी तो राम राज्य होगा। एक राम को उदाहरणार्थ चित्रित कर सबके सामने रखा गया है। परंतु आज हर आत्मा राम दुःखी व परेशान है, अहंकार से भरपूर है, जिसे ही रावण स्वरूप कह सकते हैं। यदि सभी एक साथ उठें, एक स्वर में, एक ही विश्वास के साथ उन विकारों को हटा दें, तो शायद दशहरा के साथ न्याय होगा। - ब्र.कु. विजय

मणीयासा-अहमदाबाद। वेलकम स्टूडियो के मालिक राजुभाई खत्री को राखी बांधते हुए ब्र.कु. संगीता। साथ हैं ब्र.कु. रीटा।

बिलासपुर-गीतान्जली सिटी(छ.ग.)। जिला पंचायत अध्यक्ष दीपक साहू को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. अनामिका। साथ हैं ब्र.कु. रीमा।

वालागाम-गुज.। स्वच्छता अभियान के अंतर्गत आयोजित सफाई कार्यक्रम में उपस्थित हैं पटेल समाज के प्रमुख लाखाभाई रुपावटीया, शहर के अग्रणी नटवर सिंह चौहाण, भाजपा महिला प्रमुख प्रवीणा बहन, ब्र.कु. गीता व ब्र.कु. भाई बहनें।

श्रीरामपुर-महा.। डॉ. वसंत.के. जमधड़े,वैदकीय अधीक्षक,स्त्रीरोगतज्ञ, को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मंदा। साथ हैं प्राध्यापक श्वेता दुग्गल व अन्य।

व्यावरा-म.प्र.। रक्षाबंधन कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए नगर अध्यक्ष अखिलेश जोशी, उपाध्यक्ष इकबाल हुसैन, गुरूद्वारे के अध्यक्ष संतोख सिंह, विश्व हिन्दु परिषद के जिला अध्यक्ष डॉ. अशोक अग्रवाल, ब्र.कु. मधु व ब्र.कु. लक्ष्मी।

छत्तरपुर-म.प्र.। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर आयोजित चैतन्य झाँकी में प्रथम आरती कर झाँकी का शुभारंभ करते हुए एस.डी.एम. रविन्द्र चौकसे।

शिर्डी-महा.। नगरपालिका की नगराध्यक्षा अनिता ताई जगताप को रक्षासूत्र बांधने के बाद ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. भारती। साथ हैं ब्र.कु. पदमा व ब्र.कु. लता।

दुर्ग-छ.ग.। रेलवे स्टेशन पर कुली भाइयों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. आस्था व अन्य।

नालखेड़ा। रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में विधायक मुरलीधर पाटीदार, प्रकाश फाफरिया व ब्र.कु. रुक्मणि।

जगतमाता की जगजाहिर छवि

किसी को चाहिए वर्चस्व, किसी को श्री, किसी को आयु, किसी को आरोग्य, तो कोई प्यासा है धन का। इनकी प्राप्ति के लिए सहज रास्ता क्या चुना? नवरात्रों में नव देवियों की उपासना कर सुख व ऐश्वर्य तो प्राप्त कर ही लेंगे, नौ में से कोई कुछ न कुछ तो अवश्य दे ही देगा! साल में दो बार ही ऐसा कारनामा लोग कर पाते हैं, बाकी समय देवी को आराम करा देते हैं। हमारी देवियां भी तो कितनी महान हैं, जो बिना बोले ही आज दिन तक सभी को मनोवांछित फल दे ही रही हैं।

शास्त्रगत उल्लेखों को लें तो कहा जाता है कि आदि शक्ति का अवतरण सृष्टि के आरंभ काल से है। कभी सागर की पुत्री सिंधुजा-लक्ष्मी, तो कभी पर्वतराज हिमालय की कन्या अपर्णा-पार्वती। कहते हैं तेज, धुति, दीप्ति, ज्योति, कांति, प्रभा और चेतना और जीवन शक्ति संसार में जहां कभी भी दिखाई देती है, वहां देवी का ही दर्शन होता है। परंतु देवी दुर्गा जी के उन नौ रूपों के अलौकिक दर्शन व आध्यात्मिकता के पुट के साथ उसका अर्थ जानते हैं।

शैलपुत्री:- नौ रूपों में दुर्गा जी का प्रथम स्वरूप ``शैलपुत्री'' है। शास्त्रगत उल्लेखों को लें तो कहते हैं कि पर्वतराज हिमालय के घर पुत्री रूप में उत्पन्न होने के कारण इनका नाम ``शैलपुत्री'' पड़ा। इन्हीं का दूसरा नाम सती भी है। इनका वाहन वृषभ है, इसलिए इनका एक नाम वृषाभढ़ा भी है। कहानी यह कहती है, एक बार उनके पिता दक्ष प्रजापति ने यज्ञ करवाया, जिसमें सिर्फ शंकर जी, जो सती के पति थे उन्हें निमंत्रण नहीं दिया गया। फिर भी सती ने शंकर जी से आज्ञा लेकर यज्ञ में जाने की अनुमति ली। वहां उनके पति शंकर का उपहास होता है, जिससे क्षुब्ध होकर उन्होंने अपने आपको भस्म कर दिया। यही सती अगले जन्म में शैलराज हिमालय के यहां ``शैलपुत्री'' बनकर आयीं, जिन्हें सब पार्वती भी कहते हैं।

जिस पुत्री का अपमान हुआ, वो भी उसके पिता के घर, अर्थात् जो परिवार के लिए सतीत्व को धारण किए हुए थी, अपमान होने से दुःख व दुःख के कारण अपने को भस्म करना, अर्थात् इस संसार से विरक्ति। और पुनः पर्वतराज हिमालय अर्थात् उससे भी ऊँचे कुल में जन्म लिया। हिमालय से यहां अर्थ ऊँची स्थिति का है, इसलिए उनका एक नाम वृत्तियों से परे `पार्वती' भी है। आज की वर्तमान दशा उन सभी कन्याओं की है, जहां उसे अपमान का घूट पीकर जीवन जीना पड़ रहा है। उसी स्थिति से लड़ने हेतु उन्हें परमात्मा के लिए सती बनकर ही पार पाना होगा।

ब्रह्मचारिणी - नवरात्र पर्व के दूसरे दिन माँ ``ब्रह्मचारिणी'' की पूजा-अर्चना की जाती है। यहां पर ब्रह्म का अर्थ तप से है, चारिणी का अर्थ आचरण से है। तप का आचरण करने वाली ब्रह्मचारिणी।

शैलराज हिमालय के यहां जन्म लेने के पश्चात् इन्होंने तपस्या कर, पुनः शिव को वर के रूप में पाने का संकल्प किया। इसलिए इस रूप को तप, त्याग, तपस्या, वैराग्य, सदाचार व संयम की वृद्धि हेतु माना जाता है।

कहा भी जाता है कि ब्रह्मचारिणी के रूप में इन्होंने केवल फल-फूल खाकर संयम, नियम, अपनाकर भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त किया था। भावार्थ सरल है, ब्रह्मचर्य व्रत हेतु इन्हीं कंद, मूल, फल की आवश्यकता होती है, अर्थात् सात्विक भोजन, जिसके सेवन से प्राकृतिक रूप से हमारा सब कुछ अच्छा रहता है। इसमें कठिन परिस्थिति से निकलने में मदद मिलती है।

चन्द्रघंटा - देवी का तीसरा स्वरूप `चन्द्रघंटा' है, जिसमें कहते हैं, यह स्वरूप परमशांतिमय और कल्याणकारी होता है। इस देवी के मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चन्द्र होता है, इसलिए उसे चन्द्रघंटा कहते हैं।

जब हम ब्रह्मचर्य व्रत के साथ व संयम-नियम के साथ तप आदि करते हैं तो धीरे-धीरे उसका प्रताप चारो तरफ फैलता है। आपका शरीर कांतिमय सोने के समान चमकीला बन जाता है। आपकी सकारात्मक तरंगों से बड़े-बड़े राक्षस अर्थात् विकट परिस्थितियां क्षीण हो जाती हैं। उसके बाद ही आपको अलौकिक व दिव्य अनुभवों की प्राप्ति भी होने लग जाती है। उसे सभी कहते हैं कि आपका मणिपुर चक्र भी जागृत हो जायेगा।

कुष्माण्डा - कहा जाता है कि अपने चौथे स्वरूप में माँ अपनी मंद व हल्की हँसी के द्वारा `अण्ड' यानी `ब्रह्माण्ड' को उत्पन्न करने के कारण कुष्माण्डा कहलायी। अर्थात् ब्रह्माण्ड की रचना की आदि स्वरूपा देवी `कुष्माण्डा' हैं। अर्थ यह है कि हमारी चंद्रघंटा अर्थात् कल्याणकारी व पवित्र स्वरूप से ही ब्रह्माण्ड अर्थात् भ्रूण की अथवा `अण्ड' की रचना होती है। सृष्टि जब आदिकाल में थी तो बहुत पवित्र थी, आज की सृष्टि की मनोदशा बहुत अलग है। उस नवसृष्टि की रचना ``कुष्माण्डा'' अर्थात् पवित्रता के आधार से रची जाती है। इसलिए `कुष्माण्डा' स्वरूप में देवी को अष्टसिद्धियों अर्थात् आठ हाथों के साथ दर्शाया गया है। इस पवित्रता के तेज द्वारा ही नई सृष्टि व प्रकृति बनेगी।

स्कंदमाता - कहते हैं भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय का ही नाम स्कंद है। स्कंद का अर्थ है क्षरण अर्थात् विनाश। कहा जाता है, तारकासुर का वध करने के लिए कार्तिकेय का जन्म हुआ।

पांचवे दिन स्कंद माता की पूजा अर्चना की जाती है। कहते हैं कि इनकी कृपा से मूढ़ भी ज्ञानी हो जाता है।

जब नव सृष्टि में मानव आता है, उस समय कोई भी आसुरी शक्ति वहां नहीं होती है। उस समय उसका सम्पूर्णतया क्षरण अर्थात् विनाश हो जाता है। इसलिए इनकी दायीं तरफ ऊपर वाली भुजा से स्कंद को गोद में पकड़े हुए हैं। नीचे वाली भुजा में कमल पुष्प है। अतः इस संसार में रहकर संसार से उपराम रहकर भी जिया जा सकता है।

कात्यायनी - माँ दुर्गा का छठा स्वरूप कात्यायनी है। ऐसी मान्यता है कि महर्षि कात्यायन ने भगवती पराम्बा की उपासना की। उनकी इच्छा थी कि उन्हें पुत्री प्राप्त हो। माँ भगवती ने उनके घर पुत्री के रूप में जन्म लिया तो नाम पड़ा `कात्यायनी'।

जब `स्कंदमाता' अर्थात् विनाश कराने वाली देवी अपने स्वरूप से असुरों का संहार करती है, उस समय एक पुत्र व पुत्री से कार्य पूर्ण नहीं होता, उसके लिए अनेक पुत्रियों की आवश्यकता है। कहते हैं यदि पुत्री है, तो वह 21 कुल का उद्धार करेगी। उससे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारो पुरुषार्थ पूरे हो जाते हैं तथा रोग, शोक, संताप और भय नष्ट हो जाते हैं।

कालरात्रि - देवी दुर्गा का यह सातवां स्वरूप है, जिसे काल पर विजय प्राप्त कराने वाली कहा जाता है। कहा भी जाता है, ब्रह्माण्ड की सारी सिद्धियों के दरवाज़े खुलने लगते हैं।

उपासना हेतु हमेशा रात्रि व रात्रि के प्रथम प्रहर को ही लिया जाता है। कहते हैं कि उस समय यदि हम साधना करते हैं, तो हमें स्वतः ही सर्वसिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। हम समय को अपने वश में कर सकते हैं। इससे हम निर्भय व निडर बन जाते हैं।

महागौरी - माँ दुर्गा का आठवां स्वरूप ``महागौरी'' का है। कहते हैं कि इसकी उपासना से भक्तों के तमाम **कल्मष** धुल जाते हैं। कहा जाता है कि इनका गौर वर्ण है, जिसकी उपमा, शंख, चंद्र और कुंद, फूल से दी गई है। इनकी आयु आठ वर्ष, आभूषण व वस्त्र सफेद दिखाए हैं। इनका एक नाम श्वेताम्बरा भी कहा गया।

आध्यात्मिक रूप से देखें तो कहते हैं कि जब ये तपस्या कर रही थीं शिव के प्राप्ति हेतु तो उस समय इनका शरीर काला पड़ गया। जिस पर भगवान शिव ने प्रसन्न होकर गंगा के पवित्र जल से धोकर इनके शरीर को कांतिमय बना दिया। भावार्थ यह है कि ``आत्मा'' जब कलि काल में होती है तो बिल्कुल काली होती है, लेकिन तप अर्थात् ज्ञान गंगा से धोकर उसे गौर वर्ण या महागौरी बना सकते हैं।

सिद्धिदात्री - अन्तिम स्वरूप या नौवां रूप सिद्धिदात्री के रूप में है। इसे अर्धनारीश्वर रूप से दिखाया गया है। जब हम उपरोक्त आठों स्वरूपों को अपने जीवन में ले आते हैं, तो एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इसलिए सम्पूर्ण पवित्र, गृहस्थ का प्रतीक है, अर्धनारीश्वर स्वरूप जिसमें आधा पुरुष व आधा स्त्री को दिखाया गया। - ब्र.कु. नयना,दिल्ली

शिकर। पुलिस निरीक्षक निंबालकर साहेब को राखी बांधते हुए ब्र.कु. शकुंतला।

मालशिरस-महा.। तहसीलदार सुरेखा दिवरे को राखी बांधते हुए ब्र.कु. जयश्री। साथ हैं ब्र.कु. राणी।

दुर्ग-छ.ग.। एस.टी.एफ. बघेरा के जवानों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चैतन्य प्रभा।

अहमदाबाद-गुज.। भारतीय रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा आयोजित 'स्पीड, सेफ्टी और सीरिच्युअलिटी' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए वेस्टर्न रेलवे के वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर प्रांजोल चंद्राजी, सीनियर कोचिंग डिपो ऑफीसर मनीष कुमार, ब्र.कु. नंदा व ब्र.कु. नंदिनी।

भीकनगांव-म.प्र.। विधायक झुमा सोलंकी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. रूक्मणि।

शिरपुर। विधायक अमरीश भाई पटेल को राखी बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति।

बाजीपुरा-बारडोली। 'आध्यात्मिकता और आधुनिकता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रीति। मंचासीन हैं सुगर फैक्ट्री के प्रमुख समीर भाई, पाटील भाई, प्रो. लतेस भाई व बीमा कम्पनी के एजेन्ट छीतू भाई।

ग्वालियर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के ट्रान्सपोर्ट एंड ट्रैवल विंग द्वारा आयोजित एकदिवसीय कॉन्फ्रेन्स में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. दिव्य प्रभा, विधायक घनश्याम पिरौनिया, एडीशनल एस.पी. योगेश्वर शर्मा, ट्रैफिक पुलिस डी.एस.पी. अजय त्रिपाठी, एसोसिएशन ऑफ ग्वालियर यूथ सोसायटी के अध्यक्ष संजय कट्ठल, ब्र.कु. भारती, ब्र.कु. राकेशा व ब्र.कु. ज्योति।

भुज-गुज.। भुज लेवा पटेल होस्टल में मेमोरी मैनेजमेंट कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. डोनिका, ब्र.कु. रक्षा, होस्टल के रेक्टर श्रीमती खुशबू तथा अन्य शिक्षकगण।

हमारे सर्व कर्मों के ज़िम्मेवार हम स्वयं

गतांक से आगे...

यही बात यहाँ पर कही गई है कि हे अर्जुन! सबमें आत्मभाव को देखो, आत्मरूप को देखो, उसकी चमड़ी को नहीं देखो। क्योंकि चमड़ी को देखने से अनेक भाव उत्पन्न होंगे। अष्टावक्र ने राजा से कहा कि आपको एक सेकण्ड में ज्ञान चाहिए ना? मैं आपको अभी ज्ञान नहीं दूंगा, समय आने पर ज्ञान दूंगा। सभा विसर्जित हुई और जैसे ही सभा विसर्जित हुई राजा ने अपना घोड़ा मंगवाया कि थोड़ा बाहर सैर करके आते हैं। जैसे ही घोड़ा आया और राजा ने एक पैर घोड़े पर रखा और एक पैर उनका ज़मीन पर था। दूर से अष्टावक्र ने राजा को आवाज़ दी कि हे राजन! इस वक्त तुम कहाँ हो? राजा सोच में पड़ गया कि ज़मीन पर होते हुए ज़मीन पर नहीं हूँ, घोड़े पर होते हुए भी घोड़े पर नहीं हूँ। अष्टावक्र कहते हैं कि यही तो जीवन-मुक्ति का रहस्य है कि संसार में रहते हुए संसार से अलिप्त रहो, ये सही मार्ग है जीवन-मुक्ति की अनुभूति करने का। मुक्ति से भी श्रेष्ठ, जीवन-मुक्ति को माना गया है।

भगवान एक बहुत सुंदर रहस्य बताते हैं कि परमात्मा मनुष्य में कर्तापन को नहीं रचता, न ही कर्मों को रचता है और न ही कर्मफल के संयोग को रचता है। परंतु स्वभाव में स्थित प्रकृति के दबाव के अनुसार ही सब कार्य होते हैं। आज दिन तक हमारी यह मान्यता थी कि जो कुछ भी मनुष्य करता है, भगवान की मर्ज़ी के बिना नहीं करता है। एक हाथ भी उठता है, तो भगवान की मर्ज़ी के बिना नहीं उठता है। एक पत्ता जो हिलता है वह भी भगवान की मर्ज़ी के बिना नहीं हिलता है। अब सोचने की बात है कि ये हाथ जो उठा और उसने जाकर के किसी को थप्पड़ मारी तो क्या कहेंगे कि भगवान की मर्ज़ी हुई। क्या भगवान की ऐसी भी मर्ज़ी होती है? श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने कहा है कि मनुष्य में कर्तापन को मैं नहीं रचता हूँ। उसने हाथ उठाकर के थप्पड़ मारा तो वो उसका अपना कर्म है। उसके लिए मैं ज़िम्मेवार नहीं हूँ। मनुष्य अज्ञानता के वश कोई भी ज़िम्मेवारी अपने ऊपर लेना नहीं चाहता है। उसे हमेशा दूसरों को दोषी बनाने की आदत है। इसलिए जीवन में भी कुछ होता है तो कहते हैं कि भगवान ज़िम्मेवार है।

भगवान ने स्पष्ट कहा है कि देहधारी आत्मा अपनी स्वाभाविक स्वतंत्र इच्छा से कर्म करती है। इसलिए उसका उत्तरदायित्व भी उसी के ऊपर है। वह अपने किए हुए कर्मों का फल भोगती है। परमात्मा किसी के पुण्य कर्म या पाप कर्म के लिए ज़िम्मेवार नहीं है। अपने कर्मों के लिए हम खुद ज़िम्मेवार हैं। हमारे कर्म के लिए परमात्मा ज़िम्मेवार नहीं है। क्योंकि जब ये ज़िम्मेवारी हम खुद उठाने की शक्ति रखेंगे तो हम हर कर्म सोच समझकर करेंगे। लेकिन शायद बचपन से ही ये संस्कार पड़े हैं कि दोष दूसरों के ऊपर डाल दो। इसलिए दूसरे के ऊपर दोष डालते रहते हैं। एक छोटा बच्चा जब चलने का अभ्यास करता है तो किसी चीज़ को पकड़कर के खड़ा होता है। लेकिन जैसे ही किसी चीज़ को पकड़कर वह बच्चा खड़ा हुआ तो उसके पैरों में वो बैलेंस नहीं होता है, तो तुरंत वह गिर जाता है। जैसे ही वह गिर जाता है तो पहली प्रतिक्रिया क्या होती है उसकी? वह पहले चारो तरफ देखता है कि किसी ने देखा तो नहीं! कितना होशियार होता है वो बच्चा! पहले चारो तरफ देखता है। अगर उसकी माँ ने देख लिया तब वह रोना चालू करता है। वह बच्चा रोना क्यों चालू करता है, सेल्फ डिफेंस अर्थात् प्रोटेक्शन के लिए। - क्रमशः

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

दशहरा का... - पेज 2 का शेष

रावण ने कौन-सी सीता को चुराया?

रामायण की कथा से तो साधारणतया यह समझा जाता है कि रावण ने सीता को चुराया था। इस कारण ही राम ने रावण को मारा। परंतु यदि हम सीता की वास्तविकता को देखें तो क्या सचमुच कोई कन्या किसी खेत से जन्म ले सकती है? वस्तुतः जैसे रावण विकारों का प्रतीक है वैसे ही सीता भी आत्मा का प्रतीक है। यह संसार ही कर्मक्षेत्र अथवा खेत है। आत्मा रूपी सीता इस संसार रूपी क्षेत्र पर आती है अथवा जन्म लेती है शरीर द्वारा कर्म करने के लिए। तुलसीदास जी ने इसी भाव को व्यक्त करते हुए एक स्थान पर राम से कहलवाया है –

इहां हरि निशिचर वैदेही, खोजत फिरत हम आवत तेही।

अर्थात् यहां निशिचर यानि रात्रि में विचरने वाले व अज्ञान की रात्रि में तो विकार ही रहते हैं। उन्होंने विदेही अर्थात् आत्मा रूपी सीता को हर लिया है। हम उसी की खोज में हैं। तो आत्मा ही पंचवटी में निवास करने वाली सीता है जिसको रावण छल लेता है। पंचवटी शरीर को कहा गया है क्योंकि यह पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पाँच तत्वों की वाटिका है। इसमें आत्मा रूपी सीता अपने निराकार परमेश्वर राम (की स्मृति में) तथा लक्ष्मण के साथ (अर्थात् अपने मन को अपने लक्ष्य में टिका कर) रहती है। परंतु भौतिकवाद रूपी मारीच धोखे से अर्थात् बनावटी आकर्षण से हम आत्मा रूपी सीताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है और हम उस स्वर्ण मृग अथवा मृग-तृष्णा के धोखे में आकर परमात्मा को अपने से दूर कर देती हैं। तब ही निराकार परमात्मा `राम' हमें लक्ष्मण रेखा अर्थात् हमारे मन को अपने लक्ष्य की मर्यादा में रहने की आज्ञा देते हैं। यदि हम अपने इस लक्ष्य की स्मृति में रहते हैं कि हमें तो सतयुगी देवता बनना है, हमें तो सर्वगुण सम्पन्न और सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है, तो विकार रूपी अवगुण हमारे समीप नहीं आ सकते। वह भस्म हो जायेंगे। परन्तु यदि हम अपनी आत्मिक स्थित तथा लक्ष्य की मर्यादा को तोड़ देते हैं तो रावण हमको हर लेता है। यह विकार हमारे सामने साधु के भेष में आते हैं और हम आत्मा रूपी सीतायें अपने लक्ष्य को भूलकर माया रूपी रावण की कैद में फँस जाती हैं। फिर परमात्मा राम हमें छुड़ाने के लिए आते हैं। परमात्मा `राम' का मनुष्यात्माओं को विकारों से छुड़ाना ही - सच्ची विजयदशमी अथवा दशहरा है।

सिद्धपुर-गुज.। पुलिस इंस्पेक्टर जिगर पंडित को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. बिन्दु व ब्र.कु. हिमांशु।

धार-म.प्र.। कलेक्टर जयश्री कियावत को राखी बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. सत्या। साथ हैं ब्र.कु. राधा।

कथा सरिता

याचक बड़ा या दाता ?

राजा दशरथ जब अपने चारो बेटों की बारात लेकर राजा जनक के द्वार पहुंचे तो राजा जनक ने सम्मानपूर्वक बारात का स्वागत किया। तभी दशरथ ने जी आगे बढ़कर जनक जी के चरण छू लिए।

चौंककर जनक जी ने दशरथ जी को थाम लिया और कहा, ``महाराज, आप बड़े हैं, वर पक्ष वाले हैं, ये उल्टी गंगा कैसे बहा रहे हैं?''

इस पर दशरथ जी ने बड़ी सुंदर बात कही...''

महाराज! आप दाता हैं, कन्यादान कर रहे हैं, मैं तो याचक हूँ, आपके द्वार कन्या लेने आया हूं। अब आप ही बताएं कि दाता और याचक दोनों में कौन बड़ा है?''

यह सुनकर जनक जी के नेत्रों से अश्रुधारा बह निकली।

भाग्यशाली हैं वो जिनके घर होती हैं बेटियां...

हर बेटी के भाग्य में पिता होता है लेकिन हर पिता के भाग्य में बेटी नहीं होती।

एक और फूल खिलेगा

हमने पुष्प से कहा...!!!

कल तुम मुरझा जाओगे फिर क्यों मुस्कराते हो? व्यर्थ में यह ताजगी किसलिए लुटाते हो?

फूल चुप रहा -

इतने में एक तितली आई, क्षण भर आनंद लिया, उड़ गई...

एक भौंरा आया गुनगुनाया, सुगन्ध बटोरी, आगे बढ़ गया...

खेलते हुए एक बालक ने स्पर्श सुख लिया, फूल की सुंदरता को निहारा फिर खेलने लग गया।

तब फूल बोला - मित्र, क्षण भर को ही सही मेरे जीवन ने कितनों को सुख दिया। क्या तुमने कभी ऐसा किया है?

कल की चिंता में आज के आनंद में विराम क्यों करूँ?

माटी ने जो रूप, रस, गंध और रंग दिया है उसे बदनाम क्यों करूँ?

मैं हँसता हूँ क्योंकि हँसना मुझे आता है, खिलना मुझे सुहाता है।

मैं मुरझा गया तो क्या, कल फिर एक नया फूल खिलेगा न कभी।

न कभी मुस्कान रुकी है, न सुगन्ध...

जीवन तो एक सिलसिला है वह इसी तरह चलेगा, वह इसी तरह चलेगा।

``खुश रहिये, मुस्कराते रहिये।''

हम स्वयं ही भस्मासुर

अमेरिका में जब एक कैदी को फाँसी की सजा सुनाई गई तो वहां के कुछ वैज्ञानिकों ने सोचा कि क्यों न इस कैदी पर कुछ प्रयोग किया जाये! तब कैदी को बताया गया कि हम तुम्हें फाँसी देकर नहीं परन्तु ज़हरीला कोबरा साँप डसाकर मारेंगे। उसके सामने बड़ा सा ज़हरीला साँप ले आने के बाद कैदी की आँखें बंद करके कुर्सी से बांधा गया और उसको साँप नहीं बल्कि दो सेफ्टी पिन्स चुभाई गई! और क्या हुआ कि कैदी की कुछ सेकेण्ड में ही मौत हो गई। पोस्टमार्टम के बाद पाया गया कि कैदी के शरीर में साँप के ज़हर के समान ही ज़हर है। अब ये ज़हर कहां से आया जिसने उस कैदी की जान ले ली...वो ज़हर उसके खुद शरीर ने ही सदमे में उत्पन्न किया था। हमारे हर संकल्प से पॉज़ीटिव एवं निगेटिव एनर्जी उत्पन्न होती है और वो हमारे शरीर में उस अनुसार हारमोन्स उत्पन्न करती है। 75% बीमारियों का मूल कारण नकारात्मक सोच से उत्पन्न ऊर्जा ही है।

आज इंसान ही अपनी गलत सोच से भस्मासुर बन खुद का विनाश कर रहा है। अपनी सोच सदैव सकारात्मक रखें और खुश रहें। 25 साल की उम्र तक हमें परवाह नहीं होती कि ``लोग क्या सोचेंगे!''

50 साल की उम्र तक इसी डर में जीते हैं कि ``लोग क्या सोचेंगे!!''

50 साल के बाद पता चलता है कि ``हमारे बारे में कोई सोच ही नहीं रहा था!!!''

कमी में भी गुण देखो

बहुत समय पहले की बात है, किसी गांव में एक किसान रहता था। वह रोज़ भोर में उठकर दूर झरने से स्वच्छ पानी लेने जाया करता था। इस काम के लिए वह अपने साथ दो बड़े घड़े ले जाता था, जिन्हें वो डंडे में बांधकर अपने कंधे पर दोनों ओर लटका लेता था।

उनमें से एक घड़ा कहीं से फूटा हुआ था और दूसरा एकदम सही था। इस वजह से रोज़ घर पहुंचते-पहुंचते किसान के पास डेढ़ घड़ा पानी ही बच पाता था। ऐसा दो सालों से चल रहा था। सही घड़े को इस बात का घमंड था कि वो पूरा का पूरा पानी घर पहुंचाता है और उसके अंदर कोई कमी नहीं है, वहीं दूसरी तरफ फूटा घड़ा इस बात से शर्मिंदा रहता था कि वो आधा पानी ही घर तक पहुंचा पाता है और किसान की मेहनत बेकार चली जाती है। फूटा घड़ा ये सब सोच कर बहुत परेशान रहने लगा और एक दिन उससे रहा नहीं गया, उसने किसान से कहा, ``मैं खुद पर शर्मिंदा हूँ और आपसे क्षमा मांगना चाहता हूँ।''

``क्यों?'' किसान ने पूछा ``तुम किस बात से शर्मिंदा हो?''

``शायद आप नहीं जानते पर मैं एक जगह से फूटा हुआ हूँ और पिछले दो सालों से मुझे जितना पानी घर पहुंचाना चाहिए था बस उसका आधा ही पहुंचा पाता हूँ, मेरे अंदर ये बहुत बड़ी कमी है, और इस वजह से आपकी मेहनत बर्बाद होती रही है।'' फूटे घड़े ने दुःखी होते हुए कहा।

किसान को घड़े की बात सुनकर थोड़ा दुःख हुआ और वह बोला, ``कोई बात नहीं, मैं चाहता हूँ कि आज लौटते वक्त तुम रास्ते में पड़ने वाले सुंदर फूलों को देखो।''

घड़े ने वैसा ही किया, वह रास्ते भर सुंदर फूलों को देखता आया, ऐसा करने से उसकी उदासी कुछ दूर हुई पर घर पहुंचते-पहुंचते फिर उसके अंदर से आधा पानी गिर चुका था, वो मायूस हो गया और किसान से क्षमा मांगने लगा।

किसान बोला, ``शायद तुमने ध्यान नहीं दिया, पूरे रास्ते में जितने भी फूल थे वो बस तुम्हारी तरफ ही थे, सही घड़े की तरफ एक भी फूल नहीं था। ऐसा इसलिए क्योंकि मैं हमेशा से तुम्हारे अंदर की कमी को जानता था और मैंने उसका लाभ उठाया। मैंने तुम्हारे तरफ वाले रास्ते पर रंग-बिरंगे फूलों के बीज बो दिए थे, तुम रोज़ थोड़ा-थोड़ा कर के उन्हें सींचते रहे और पूरे रास्ते को इतना खूबसूरत बना दिया। आज तुम्हारी वजह से ही मैं इन फूलों को भगवान को अर्पित कर पाता हूँ और अपना घर सुंदर बना पाता हूँ। तुम्हीं सोचो अगर तुम जैसे हो वैसे नहीं होते तो भला क्या मैं ये सब कुछ कर पाता!''

सीख- दोस्तों हम सभी के अंदर कोई न कोई कमी होती है, पर यही कमियां हमें अनोखा बनाती हैं। उस किसान की तरह हमें भी हर किसी को वो जैसा है वैसा ही स्वीकारना चाहिए और उसकी अच्छाई की तरफ ध्यान देना चाहिए और जब हम ऐसा करेंगे तो ``फूटा घड़ा'' भी ``अच्छे घड़े'' से मूल्यवान हो जायेगा।

राजगढ़-म.प्र.। टी.आई. जे.एल.सुन्दरे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मधु।

ग्वालियर-म.प्र.। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के शुभारंभ कार्यक्रम में सम्मिलित हुए कलेक्टर डॉ. संजय गोयल, राजमाता विजयराजे सिंधिया कृषि विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो. अनिल कुमार, ब्र.कु. रेशमा,गुज., ग्राम विकास प्रभाग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. रेखा, भोपाल ज़ोन निर्देशिका ब्र.कु. अवधेश, ब्र.कु. रोमल,गुज. व अन्य गणमान्य जन।

शिरपुर-महा.। प्रांत अधिकारी राहुल पाटील को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उषा।

कोलार-कर्नाटक। श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. नारायण, गोकुल एज्युकेशन इंस्टीट्यूट के सेक्रेट्री वी.नारायण स्वामी, एम.एल.स्वामी,वाय. नारायण स्वामी, एसोसिएट प्रो. डॉ. हरीश, डॉ. चंद्रकला व गोकुल कॉलेज के प्रिन्सीपल वी.नागराज।

तिरूपति। तिरूमाला तिरूपति देवस्थान के चीफ एक्ज़ीक्युटिव पी. साम्बा शिव राव गरू को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. लीला।

उमरिया-म.प्र.। एस.डी.ओ. आर.के. राजपूत को राखी बांधते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी।

नवरात्र या नवरात्रि

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

संस्कृत व्याकरण के अनुसार नवरात्रि कहना त्रुटिपूर्ण माना जाता है। नौ रात्रियों का समाहार, समूह होने के कारण से द्वन्द्व समास होने के कारण यह शब्द पुलिंग रूप `नवरात्र' में ही शुद्ध है।

पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा के काल में एक साल की चार संधियां हैं। उनमें मार्च व सितम्बर माह में पड़ने वाली गोल संधियों में साल के दो मुख्य नवरात्र पड़ते हैं। कहा जाता है कि इस समय रोगाणु आक्रमण की सर्वाधिक संभावना होती है। अतः उस शरीर को शुद्ध रखने के लिए और तन मन को निर्मल और पूर्णतः स्वस्थ रखने के लिए की जाने वाली प्रक्रिया ही `नवरात्र' है।

इसका एक और भी विशेष कारण है। यहां रात गिनते हैं, या नौ दिन, इसमें हमें दिग्भ्रमित नहीं होना है। दरअसल

इसका बहुत ही सूक्ष्म अर्थ है। रूपक के द्वारा हमारे शरीर को नौ मुख्य द्वारों वाला कहा गया है। इसके भीतर निवास करने वाली जीवन शक्ति ही, प्रचंड व कांतिमय आभा दुर्गा है। इन मुख्य इन्द्रियों के अनुशासन, स्वच्छता, तारतम्यता स्थापित करने के प्रतीक रूप में, शरीर को पूरे साल के लिए सुचारू रूप से क्रियाशील रखने हेतु नौ द्वारों की शुद्धि का पर्व नौ दिन मनाया जाता है।

शरीर को शुद्ध रखने हेतु सफाई व शुद्धि तो हम रखते ही हैं, परन्तु आत्मा जो इसकी रक्षक व मालिक है, उसके हेतु हम क्या करते हैं? सात्विक आहार विचारों के व्रत पालन से निश्चित रूप से अच्छे कार्य की ओर हम बढ़ेंगे। कहते भी हैं कि स्वच्छ मन-मंदिर में ही ईश्वर बसते हैं। इसलिए हर एक द्वार एक दुर्गा अथवा किला है। नौ द्वार अर्थात् नौ दुर्ग के भीतर रहने वाली जीवनी शक्ति को ही हम शक्ति स्वरूपा या आत्मा कहते हैं।

उपरोक्त बातों को यदि हम दस लाइनों में बांधें तो कह सकते हैं कि जिस मातृ शक्ति को पूजने से हमारे कष्टों का निवारण होता है, वही माता ही स्त्री अथवा नारी का एक रूपक है। नौ देवियों की पूजा, उसके नौ अलग-अलग प्रक्रियाओं को दर्शाते हैं।

`कूर्म पुराण' में पृथ्वी पर देवी के बिंव के रूप में स्त्री का पूरा जीवन, नव दुर्गा की मूर्ति के रूप में बताया गया है। कहते हैं जब स्त्री जन्म ग्रहण करती है, तो उस कन्या को ``शैलपुत्री'' अर्थात सबसे ऊँचा स्थान दिया जाता है। जब वह कौमार्य अवस्था तक पहुंचती है, तो उसे ``ब्रह्मचारिणी'' नाम दिया जाता है, इसके बाद विवाह पूर्व चंद्रमा के समान निर्मल होने से ``चन्द्रघंटा'' कहलाती है। नए जीव को जन्म देने के लिए गर्भ धारण करने से ``कुष्माण्डा'' व संतान को जन्म देने के बाद वही स्त्री ``स्कंदमाता'' होती है। संयम व साधना को धारण करने वाली स्त्री ``कात्यायनी'' व पतिव्रता होने के कारण पति की अकाल मृत्यु को भी जीत लेने से ``कालरात्रि'' कहलाती है। संसार का उपकार करने से ``महागौरी'' व धरती को छोड़कर स्वर्ग प्रयाण करने से पहले संसार को सिद्धि का आशीर्वाद देने वाली ``सिद्धिदात्री'' मानी जाती है।

उपरोक्त अर्थों को ही आज के स्त्री चरित्र के साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए। तभी नवदुर्गा व नवरात्रि के साथ सच्चा न्याय होगा।

7 कदम राजयोग की ओर...

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: मेरा नाम सतीश है, मुझे हमेशा ही बहुत ज़्यादा चिंता और डर बना रहता है, इस कारण मैं ठीक से पढ़ भी नहीं पाता और सो भी नहीं पाता। मुझे अपने भविष्य की बहुत चिंता है, मैंने डॉक्टर्स से बहुत इलाज भी करवाया है, परंतु कोई फायदा नहीं हुआ।

उत्तर: मानसिक रोग संसार में दिनोंदिन बढ़ते जा रहे हैं, अनेक युवक भी इसके शिकार हो रहे हैं। परंतु दवाइयों के द्वारा इसको ठीक नहीं किया जा सकता। क्योंकि ये रोग मन के हैं और मन की कोई दवाई नहीं होती।

प्रत्येक मनुष्य ने जनम-जनम जो विकर्म किये हैं और विकारों का भोग किया है वे सब अवचेतन मन में समाये हुए हैं। इस समय उसी अवचेतन मन से बहुत बैड एनर्जी मस्तिष्क में आ रही है। इसका बुरा प्रभाव ब्रेन पर पड़ता रहता है। ब्रेन की कई शक्तियां नष्ट होती रहती है। और ब्रेन के कई केन्द्र काम करना भी छोड़ देते हैं। इसके कारण ब्रेन कमज़ोर होने लगता है और वह किसी भी प्रकार के दबाव को सहन नहीं कर पाता।

आप रोज़ सवेरे उठकर और शाम को 108 बार लिखें, मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ और सारे दिन में विभिन्न स्वमानों का अभ्यास करें। इससे उत्पन्न वायब्रेशन्स अवचेतन मन से आने वाली बैड एनर्जी के प्रभाव को नष्ट करेगी। एक अव्यक्त मुरली का अध्ययन रोज़ करें ताकि आपका मन पॉज़ीटिवव रहे। पानी को हमेशा चार्ज करके पीयें। सवेरे आँख खुलते ही निम्नलिखित संकल्प इसी क्रम से पाँच बार दोहरायें...मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ...मैं बहुत निर्भय हूँ...मैं पदमापदम भाग्यशाली हूँ...मैं बहुत सुखी हूँ... मैं एक महान आत्मा हूँ...।

ये थोड़े से अभ्यास करने से आप इस मानसिक बीमारी से मुक्त हो जायेंगे।

प्रश्न: मेरा नाम अरविंद है, मैं अपनी बात दूसरों के सामने स्पष्ट रूप से नहीं रख पाता, मुझे बोलने में हिचक होती है और मैं थोड़ा हकलाता भी हूँ। इसीलिए मेरे मन में सदा हीन भावना बनी रहती है। मैं अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना चाहता हूँ। कभी कभी मैं अपनी सत्य बात भी दूसरों को नहीं कह पाता और बाद में पछताता हूँ, क्या करूँ?

उत्तर: हमें ऐसा लगता है कि जिन्होंने अपने पूर्व जन्मों में अपनी वाचा शक्ति का दुरुपयोग किया उन्हें ये हकलाने आदि की समस्या होती है। इसलिए आपको प्रतिदिन एक घण्टा राजयोग का पावरफुल अभ्यास तीन महीने तक करना होगा, योग से पहले ये दो स्वमान याद करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ और प्रकृति का मालिक हूँ।

सवेरे उठकर आप एक वीज़न बनायें कि मेरे सामने एक हज़ार लोगों की सभा है और मैं धाराप्रवाह भाषण दे रहा हूँ, मेरा हकलाना बंद हो गया है। साथ ही सवेरे ही 51बार लिखें.. मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और 21 दिन तक हर घंटे में पाँच बार इसी स्वमान का अभ्यास करें। इससे आपको आत्मविश्वास बढ़ेगा और अंदर का डर खत्म होगा। साथ ही आपको अपनी सत्यता की शक्ति में भी विश्वास होता जायेगा। इसके अलावा आपको अपनी बात स्पष्ट रूप से कहने का भी थोड़ा थोड़ा अभ्यास करना चाहिए। कहते हैं कि `प्रैक्टिस मेक्स अ पर्सन परफेक्ट', इससे आप अपनी समस्या से मुक्त हो जायेंगे।

प्रश्न: मेरा बेटा 35 साल का है, बचपन से ही वो तम्बाकू आदि खाने लगा था, अब शराब भी पीने लगा है, उसका संग बहुत बुरा है, कुछ दिन पहले मैंने उसे इन बुरी आदतों के लिए डांटा तो उसने बीस नींद की गोलियां खा ली। हम उसकी इन आदतों से बहुत परेशान हैं, उसे कैसे ठीक करें?

उत्तर: ये कलियुग का अंतिम काल है, यहां बहुत मनुष्यों का हाल दिनोंदिन बिगरता ही जा रहा है। व्यसनों और विकारो के प्रभाव से अनेक युवक विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। ये कलियुग का खेल अब समाप्त होने ही वाला है। इसलिए कुछ चीज़ो को तो हमें स्वीकार करना ही होगा।

आप उसे डांटे-फटकारें बिल्कुल नहीं, क्योंकि वह व्यक्ति पहले ही पराधीन है। जो मनुष्य सारे संसार को अपने वश में करना चाहता है, वह छोटे-छोटे व्यसनों के वश हो गया है, यह बहुत बड़ी गुलामी है। इसलिए आप रोज़ सवेरे एक घंट अच्छा राजयोग का अभ्यास करके उसे 15 मिनट योग के वायब्रेशन्स दें और फिर उसे आत्मा देखकर उससे इस तरह मन ही मन बातें करें... कि हे आत्मा! तुम तो देवकुल की महान आत्मा हो...तुम तो सम्पूर्ण पवित्र हो...तुम सर्वशक्तिवान की संतान बहुत शक्तिशाली हो...ये शराब और तम्बाकू आदि नशीले पदार्थ तुम्हारे लिए नहीं बने हैं...ये तो आसुरी पदार्थ हैं...इनसे जीवन नष्ट हो जाता है...। तुम्हें तो अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाना है...अपने बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनना है...तुम्हें तो बड़े बड़े काम करने हैं, इसलिए इन बुरी चीज़ों को छोड़ दो। ये प्रयोग प्रतिदिन पाँच बजे 21 दिन तक आपको करना है। हमें पूर्ण विश्वास है कि उसमें आत्मजागृति आ जायेगी क्योंकि इन सभी विचारों को उसका अंतर्मन स्वीकार कर लेगा और वह इस नारकीय जीवन से बाहर आ जायेगा। आप दिन में भी कई बार उसे आत्मा देखते हुए अच्छे वायब्रेशन्स दें। याद रखें कि आपकी चिंता उसकी इस आदत को और परिपक्व करती है, इसलिए बार-बार चिंता करके उसे निगेटिव वायब्रेशन्स न दें। वरन उसके लिए शुभ भावना और शुभकामना रखें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

Peace of Mind
For Cable & DTH
+91 8104777111
TATA SKY 192 airtel digital TV 686 VIDEOCON d2h 497 RELIANCE Digital TV 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान -मैं सच्चा सेवाधारी हूँ।

शिवभगवानुवाच – ``सेवाधारी सेवा करने से स्वयं भी शक्तिशाली बनते हैं और दूसरों में भी शक्ति भरने के निमित्त बनते हैं। सच्ची रूहानी सेवा सदा उन्नति और औरों की उन्नति के निमित्त बनाती है। दूसरे की सेवा करने से पहले अपनी सेवा करनी होगी। सेवा से डबल फायदा होता है, अपने को भी और दूसरों को भी। सेवा में बिज़ी रहना अर्थात् डबल सहज मायाजीत बनना। सेवाधारी बनना अर्थात् सहज विजयी बनना। सेवाधारी माला में सहज आ सकते हैं। क्योंकि सहज विजयी हैं। तो विजय माला में आयेंगे। सेवाधारी का अर्थ है ताजा मेवा खाने वाले। ताजा फल खाने वाले बहुत हेल्दी होंगे। कितना भी कोई उलझन में हो - सेवा खुशी में नचाने वाली है। कितना भी कोई बीमार हो सेवा तन्दरूस्त करने वाली है। सभी सेवाधारी अर्थात् सदा सेवा के निमित्त बनी हुई आत्माएं। सदा अपने को निमित्त समझ सेवा में आगे बढ़ते रहो। मैं सेवाधारी हूँ, यह मैं-पन तो नहीं आता है ना। बाप करावनहार है, मैं निमित्त हूँ। कराने वाला करा रहा है। चलाने वाला चला रहा है - इस श्रेष्ठ भावना से सदा न्यारे और प्यारे रहेंगे। अगर यह भान आया कि मैं करने वाला हूँ तो न्यारे और प्यारे नहीं। तो सदा न्यारे और सदा प्यारे बनने का सहज साधन है करावनहार करा रहा है, इस स्मृति में रहना। इससे सफलता भी ज़्यादा और सेवा भी सहज। मेहनत नहीं लगती। कभी मैं-पन के चक्र में नहीं आते।''

योगाभ्यास – अमृतवेले आँख खुलते ही स्वयं को परमधाम में महाज्योति के सम्मुख अनुभव करें... शिव बाबा शक्तियों से सुसज्जित कर रहे हैं.. वहां से उतरकर फरिश्तों की दुनिया में आ जाएं... सूक्ष्म वतन फरिश्तों की दुनिया वहां सम्पूर्ण ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा कम्बाण्ड रूप से मुझे शक्तियों व गुणों से चार्ज कर रहे हैं... उसके पश्चात् स्वयं को सशक्त कर साकार लोक में अवतरित ईश्वरीय सेवाधारी के रूप में अपना सर्वश्रेष्ठ पार्ट बजाने के लिए तैयार हो जाएं...।

मनन-चिन्तन – सच्चे सेवाधारी की निशानियां व गुण क्या होंगे ? सच्चे सेवाधारी को किन धारणाओं पर अधिक ध्यान रखना चाहिए ?

तीव्र पुरूषार्थियों के प्रति – ब्रह्मा बाबा ने अंत तक स्वयं को सेवाधारी समझा...हमेशा निमित्त, निर्माण, निरहंकारी का स्वरूप प्रत्यक्ष किया। उन्होंने कभी स्वयं को इंचार्ज या मालिक नहीं समझा... सदा शिव बाबा को ही करावनहार व स्वयं को करनहार समझा...।

स्वमान -मैं दिव्य बुद्धि के वरदान से सम्पन्न हूँ।

शिवभगवानुवाच – ``बापदादा हर ब्राह्मण बच्चे को जन्म लेते ही विशेष दिव्य जन्मदिन की दिव्य सौगात `दिव्य बुद्धि' देते हैं। दिव्य बुद्धि ही हर बच्चे को दिव्य ज्ञान, दिव्य याद, दिव्य धारणा स्वरूप बनाती है। दिव्य बुद्धि ही धारणा करने की विशेष गिफ्ट है। दिव्य बुद्धि में अर्थात् सतोप्रधान गोल्डन बुद्धि में ज़रा भी रजो तमो का प्रभाव पड़ता है तो धारणा स्वरूप के बजाए माया के प्रभाव में आ जाते हैं। सहज गिफ्ट के रूप में प्राप्त हुई दिव्य बुद्धि कमज़ोर होने के कारण मेहनत अनुभव करते हैं। जब भी मुश्किल वा मेहनत का अनुभव करते हो तो अवश्य दिव्य बुद्धि किसी माया के रूप से प्रभावित है तब ऐसा अनुभव होता है। दिव्य बुद्धि द्वारा सेकेण्ड में बापदादा की श्रीमत धारण कर सदा समर्थ, सदा अचल, सदा मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति का अनुभव करते हैं। श्रीमत सदा सहज उड़ाने वाली मत है लेकिन धारण करने की दिव्य बुद्धि ज़रूर चाहिए। तो चेक करो - अपने जन्म की सौगात सदा साथ है ?''

सावधानी – ईश्वरीय दिव्य बुद्धि की गिफ्ट सदा छत्रछाया है लेकिन अगर माया अपनी छाया डाल देती है तो छत्र उड़ जाता है केवल छाया रह जाती है।

योगाभ्यास –दिव्य बुद्धि एक अलौकिक विमान है जिससे परमधाम व सूक्ष्म वतन की सैर सहज की जा सकती है...विशेष अमृतवेले एवं नुमा शाम के योग में दिव्य बुद्धि की गिफ्ट को चेक करें कि वह साथ है...दिन भर आत्म-चिन्तन कर चेक करें कि उस पर माया का प्रभाव तो नहीं पड़ रहा है...।

मनन-चिन्तन – वरदानों को साकार रूप में लाने के लिए क्या करें ? दिव्य बुद्धि द्वारा क्या-क्या महान कार्य किए जा सकते हैं ?

तीव्र पुरूषार्थियों के प्रति – दिव्य बुद्धि पुरूषार्थी जीवन में सफलता प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है। बुद्धि की दिव्यता जितनी ज़्यादा उतना ही बापदादा व ब्राह्मण परिवार के स्नेह के पात्र बन सकते हैं। अतः ध्यान रखें कि कहीं इस गिफ्ट पर माया का प्रभाव न पड़े।

नांदेड़-कैलाश नगर(महा.)। भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष भास्कर राव पाटील को राखी बांधने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. शिवकन्या।

भिवंडी-महा.। नगरपालिका के हॉल में रक्षाबंधन कार्यक्रम में रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य समझाते हुए ब्र.कु. शिल्पा। साथ हैं कमिश्नर बालाजी, डिप्युटी कमिश्नर खांते मैडम व ब्र.कु. बिन्दू।

भोपाल। डी.आर.एम. ऑफिस में ब्रह्माकुमारीज़ के ट्रान्सपोर्ट एंड ट्रैवल विंग द्वारा आयोजित अभियान का शुभारंभ करते हुए आलोक कुमार,डिविज़नल रेलवे मैनेजर,डब्ल्यु.आर.सी., ब्र.कु. दिव्यप्रभा,नेशनल कोऑर्डिनेटर,ट्रान्सपोर्ट एंड ट्रैवल विंग, ब्र.कु. राकेशा, ब्र.कु. भारती व ब्र.कु. रीना।

चिलोड़ा-गुज.। पीयूष पटेल,डी.आई.जी.,बी.एस.एफ. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. तारा।

दीसा-गुज.। अर्बुदा हाई स्कूल में रक्षाबंधन का रहस्य समझाने के पश्चात् स्कूल के प्रिन्सीपल सहदेव चौधरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. हसुमती। साथ हैं ब्र.कु. पायल।

महू-म.प्र.। बी.जे.पी. के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयगर्वीय के नगर आगमन पर उनका स्वागत करते हुए ब्र.कु. पुनीता।

सोजीत्रा-गुज.। मध्य गुजरात बीज कंपनी के ऑफिस के कर्मचारियों को राखी बांधते हुए ब्र.कु. भगवती व ब्र.कु. धर्मिष्ठा।

भिलाई-खुर्सीपार। थाना प्रभारी पाण्डे जी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. गंगोत्री।

तिवसा-अमरावती। न्यायाधीश दलजीत कौर को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सीता,क्षेत्रीय संचालिका। साथ हैं ब्र.कु. जयश्री।

हिंगोली-महा.। अंध विद्यालय में विद्यार्थियों को राखी बांधते हुए ब्र.कु. अरुणा। साथ हैं ब्र.कु. रोशनी।

कृषि और किसानों के जीवन को समृद्ध बना सकती है यौगिक खेती - राधा मोहन सिंह

नई दिल्ली। कृषि क्षेत्र में वैज्ञानिक औजारों तथा बायो मास एनर्जी का उपयोग करने के बजाए आवश्यक है कृषि तथा किसानों के जीवन को समृद्ध बनाने हेतु राजयोग द्वारा मिट्टी, बीज तथा पौधों में शान्ति, पवित्रता तथा प्रेम के सकारात्मक प्रकम्पन फैलाने की। उक्त उद्गार यूनियन एग्रीकल्चर मिनिस्टर राधा मोहन सिंह ने ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग द्वारा तालकटोरा स्टेडियम में `अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान' के लॉचिन्ग कार्यक्रम में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आरंभ की गई ऑर्गेनिक यौगिक खेती की पद्धति मिट्टी की उर्वरता, गुणवत्ता और उत्पादकता बढ़ाने का प्रभावी माध्यम है।

सभा में समूचे भारत वर्ष से पहुंचे तीन हज़ार से अधिक कृषक, एग्रीकल्चरल साइंटिस्ट्स, एडमिनिस्ट्रेटर्स एवं विशेषज्ञों को सम्बोधित करते हुए राधा मोहन सिंह ने कहा कि इस तरह के अभियान जिसमें विज्ञान एवं आध्यात्मिकता का सम्मिश्रण हो, ना केवल ग्राम वासियों को अंधविश्वास, पुरानी लतों, बुरे प्रयासों से ही छुड़ाती है बल्कि उन्हें स्वच्छता, स्वास्थ्य, साफ-सफाई, भाईचारा तथा यौगिक खेती के लिए पूर्ण रूप से जागरुक कर प्रगति के पथ पर अग्रसर करती है।

इस अवसर पर संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि भारत मुख्यतः कृषि प्रधान देश है, अतः गांव तथा गांव वासियों

-किसान सशक्तिकरण अभियान के तहत निकाली 91 यात्राएं - हज़ारों गांवों में 82000 कार्यक्रमों का होगा आयोजन

को स्वयं तथा देश के विकास एवं समृद्धि के लिए भौतिक, तकनीकि, नैतिक तथा आध्यात्मिक आदि सभी क्षेत्रों में हर संभव सहयोग प्रदान करना चाहिए।

संस्था के मुख्य वक्ता ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि खेती और जीवन का सिद्धान्त एक ही है, जो बोयेगा वो पायेगा, जैसा बोयेगा वैसा पायेगा, जितना बोयेगा उतना पायेगा, अर्थात् जैसा कर्म करेंगे वैसा फल पायेंगे।

किसान सशक्तिकरण अभियान की प्रमुख व ग्रामीण प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सरला ने अभियान की जानकारी देते हुए बताया कि इस अभियान के तहत 91 यात्राएं निकाली जाएंगी। हर यात्रा में 12 सदस्य होंगे जो तीन महीने तक इस अभियान को जारी रखेंगे। इस अभियान के अंतर्गत हजारों गांवों में 81900 कार्यक्रम किये जायेंगे।

यूनियन मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर रूरल डेवलपमेंट सुदर्शन भगत ने अपने संदेश के द्वारा किसान शक्तिकरण अभियान की सफलता के लिए शुभ कामनाएं दी।

नई दिल्ली। सभा में हैं हज़ारों किसान भाई व कृषि से संबंधित विशिष्ट जन। दादी हृदयमोहिनी के साथ कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राधा मोहन सिंह, ब्र.कु.आशा, ब्र.कु.बृजमोहन, ब्र.कु. सरला व अन्य।

शांतिवन। दादी जानकी के साथ आई.टी. कॉन्फ्रेन्स का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. यशवंत, ब्र.कु. हरीलाल व अन्य।

प्रोद्योगिकी का विकास मानवता की सेवा के लिए हो

शांतिवन। समग्र समाज के विकास के लिए ज़रूरी है कि संसाधनों का भी विकास हो। इसके लिए सूचना प्रोद्योगिकी का विकास तेज़ी से हो रहा है, लेकिन साथ ही मानव मूल्यों का भी विकास ज़रूरी है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आई.टी. व्यवसायियों के लिए आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि मानवता का भी विकास होना चाहिए, तभी मनुष्य का सर्वांगीण विकास होगा।

इस मौके राजस्थान पिलानी के बी.आई.टी.एस. के सूचना एवं कम्प्यूटर साइंस विभाग के विभागाध्यक्ष राहुल बनर्जी ने कहा कि आज तेज़ी से पूरा विश्व सूचना प्रौद्योगिकी की बदौलत मुट्ठी में आ गया। युवाओं का रुझान तेज़ी से इसकी तरफ बढ़ रहा है। ऐसे में इसके दुरुपयोग की भी संभावना बढ़ रही है। इसलिए मूल्यों का विकास भी ज़रूरी है।

कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश सरकार के आई.टी. एवं इलेक्ट्रॉनिक विभाग के विशेष सचिव एस.सी. गुप्ता, बैंगलुरू से आए महिंद्रा टेक के डिलीवरी यूनिट के निदेशक शशिकांत मिश्रा, संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर, आई.टी. प्रभाग की अध्यक्ष डॉ. निर्मला, सीएंट के महाप्रबंधक भारती, गॉडली-वुड स्टूडियो के कार्यकारी अधिकारी ब्र.कु. हरीलाल ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु.श्रीनिधि ने किया।

खुश रहना आत्मा का स्वाभाविक गुण -ब्र.कु. शिवानी

पॉज़ीटिव विचारों से उत्पन्न अच्छे हार्मोन्स बचाते हैं बीमारियों से -डॉ. मोहित

ओ.आर.सी-गुड़गांव। जीवन में हर अच्छे कार्य के लिए स्वयं को एप्रीशिएट करना भी उतना ही आवश्यक है, जितना हम दूसरों को करते हैं, इससे हम स्वयं की ऊर्जा को बढ़ाते हैं। आज खुश रहने के लिए हम बाहर के साधनों को अपनाते हैं लेकिन खुशी तो आत्मा का निजी गुण है। जितना हम स्वयं के नज़दीक आते हैं, खुशी हमारे अंदर से निकलती है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में `राजयोगा फॉर हैप्पी एंड हेल्दी लीविंग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. शिवानी ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि जो कुछ भी हम देखते, सुनते व खाते हैं वो सभी हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बनती जाती है। हमें अपनी चेकिंग करनी है कि हमें क्या लेना है क्या नहीं। हमारा ध्यान सदैव दूसरे के गुणों की तरफ ही जाना चाहिए, अगर हमारे में ही कोई कमज़ोरी होगी तो दूसरों में भी हमें वही दिखाई देगी। हमारा एक-एक संकल्प हमारे मन, मस्तिष्क, शरीर एवं आस-पास के वातावरण को प्रभावित करता है। उन्होंने कहा कि आज व्यक्ति हर धार्मिक कर्मकाण्ड डर व भय के कारण करता है। वास्तव में धर्म तो डर को खत्म करता है, लेकिन धर्म को सही रीति न जानने के कारण अंदर में डर बैठ गया है। जब कोई भी चीज़ डर से करते हैं तो उसका परिणाम भी सदैव डर ही पैदा करता है।

दिल्ली के पन्त हॉस्पिटल से आये हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. मोहित गुप्ता ने बताया कि राजयोग से बीमारियों में बहुत फायदा होता है। योग एक मन की अवस्था है जिसमें हम अपने विचारों को सकारात्मक एवं पवित्र बनाते हैं। जीवन में विचारों का महत्वपूर्ण योगदान है। जितने हमारे विचार श्रेष्ठ, पवित्र एवं शक्तिशाली होते हैं, उतना ही मस्तिष्क की ग्रन्थियों से ऐसे हार्मोन्स पैदा होते हैं जो शरीर को बीमारियों से बचाते हैं। कार्यक्रम में आये हुए लोगों के प्रश्नों के उत्तर देते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि भय का मूल कारण सत्यता को न जानना है।

ओ.आर.सी. की प्रशासिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि वर्तमान समय कलियुग का अंत समय चल रहा है, जिस कारण नकारात्मकता का चारो तरफ प्रभाव है। हमें अगर सुरक्षित रहना है तो उसके लिए राजयोग बहुत आवश्यक है। कार्यक्रम में 1500 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की।

कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शिवानी व ब्र.कु. डॉ. मोहित गुप्ता। सभा में उपस्थित हैं शहर के हज़ारों गणमान्य जन।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - **9414006096, 9414182088,**
Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक **190** रुपये, तीन वर्ष **570** रुपये, आजीवन **4500** रुपये । **विदेश - 2500** रुपये (वार्षिक) **कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।**

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 5th oct- 2015
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।